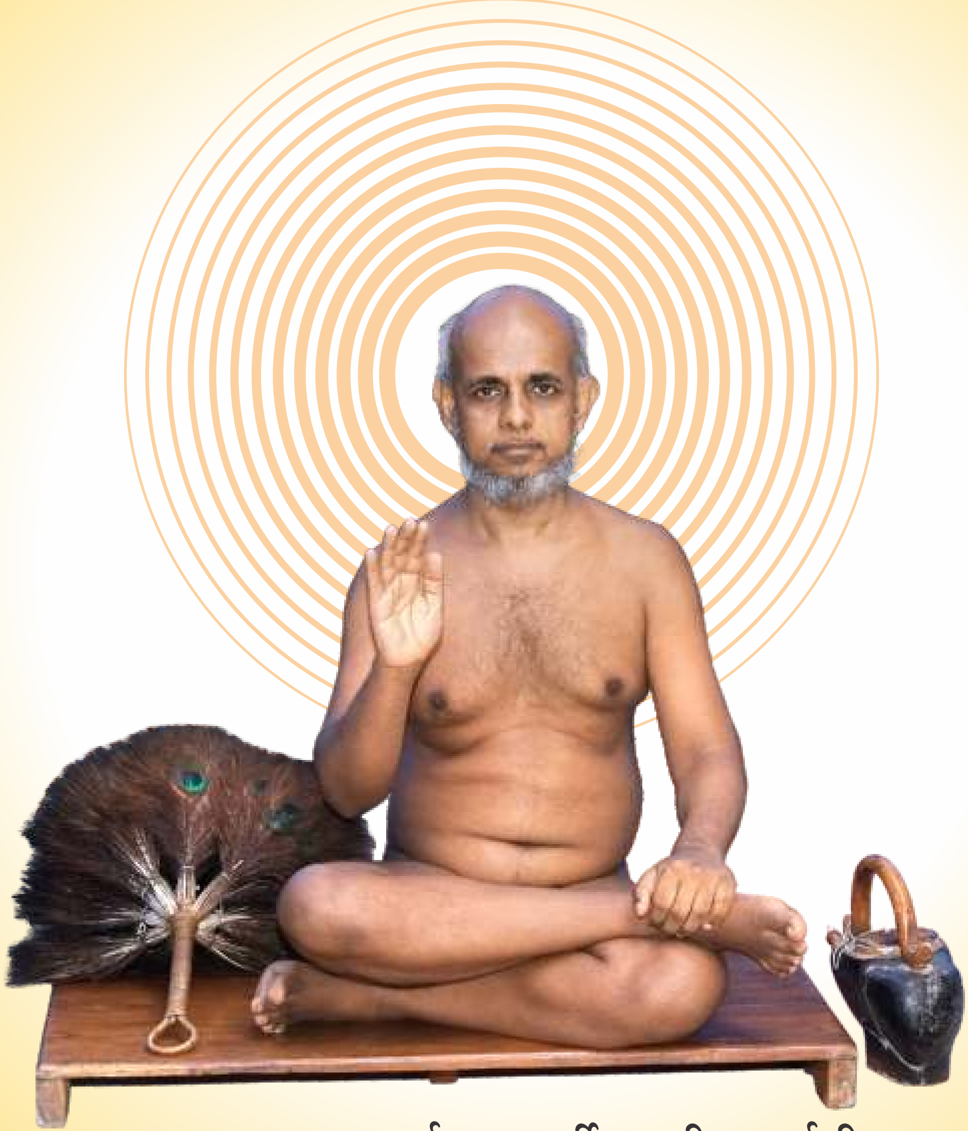

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

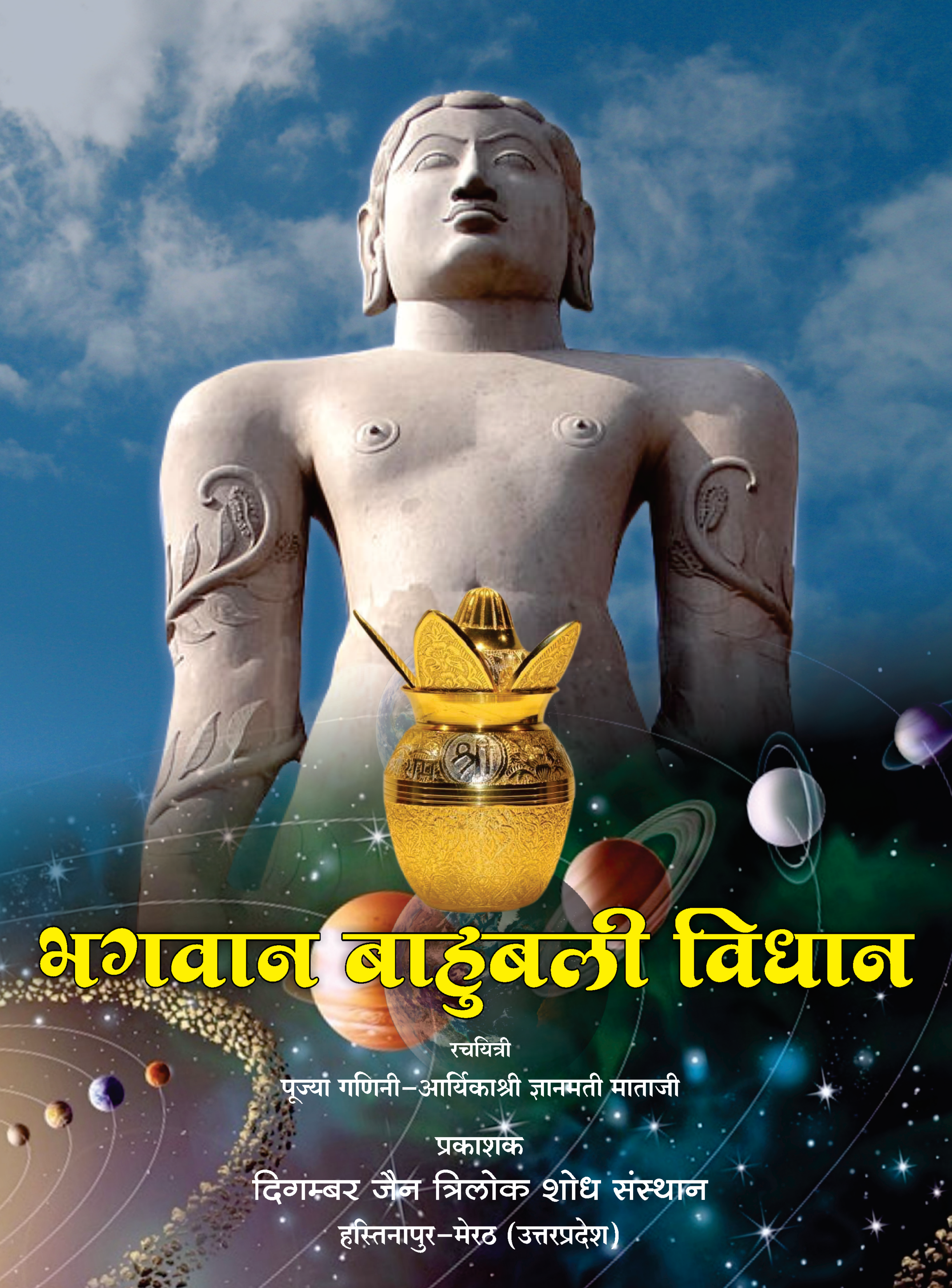

भगवान बाहुबली विधान

रचयित्री

पूज्या गणिनी–आर्यिकाश्री ज्ञानमती माताजी

प्रकाशक

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

हस्तिनापुर–मेरठ (उत्तरप्रदेश)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

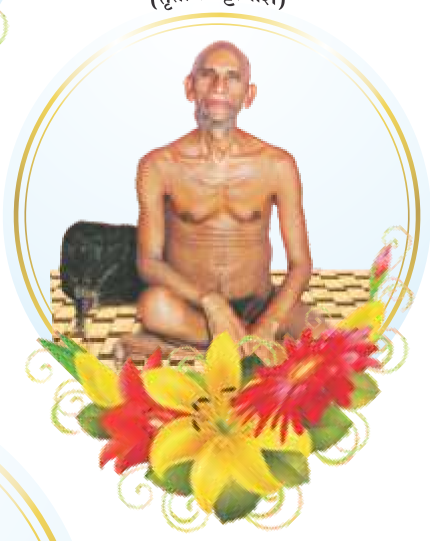

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 311
ISBN 978-93-80353-25-8

भगवान बाहुबली विधान

–रचयित्री –

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

शरदपूर्णिमा महोत्सव, 11 अक्टूबर 2011 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में
पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित
''प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर वर्ष'' के अन्तर्गत ''वेणूर'' कर्नाटक में
28 जनवरी से 5 फरवरी 2012 तक आयोजित भगवान बाहुबली
महामस्तकाभिषेक महोत्सव के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 280994

Website : www.jambudweep.org

E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

प्रथम संस्करण	वीर निर्वाण संवत् 2538	मूल्य
1100 प्रतियाँ	माघ शुक्ला त्रयोदशी 5 फरवरी 2011	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

-: निर्देशन एवं सम्पादक :-

स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

-: प्रबंध सम्पादक :-

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

मुद्रक-स्वस्तिक प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिसर्स, दिल्ली, मो.-08800274437

सम्पादकीय

–स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश
रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

आज से 30-40 वर्ष पूर्व समाज में मण्डल विधानों को करने की परम्परा कम थी, यदा-कदा ही कोई विधान आयोजित किये जाते थे, उसमें प्रमुख कारण यह था कि पहले संस्कृत में विधान होने से करने वाले भक्तों को विधान की पंक्तियों का भाव समझ में नहीं आता था, वे मात्र "स्वाहा-स्वाहा" का उच्चारण करके एक थाली के चावल दूसरी थाली में चढ़ा दिया करते थे परन्तु पिछले 30-35 वर्षों से जब से पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने सुन्दर-सुन्दर तर्जों पर हिन्दी में भावपूर्ण विधानों की रचना की है, तब से समाज में एक आश्चर्यकारी परिवर्तन देखने को मिला है, अब तो शायद ही कोई दिन ऐसा रहता होगा, जब देश के किसी न किसी स्थान पर पूज्य माताजी द्वारा रचित विधान न हो रहा हो।

हमारी वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला से प्रकाशित तीन सौ ग्रंथों में से सर्वाधिक मांग मण्डल विधानों की रहती है, अब तक पूज्य माताजी की लेखनी से शांति विधान, सिद्धचक्र विधान, कल्पद्रुम विधान, इन्द्रध्वज विधान, तीन लोक विधान, सर्वतोभद्र विधान, ऋषभदेव विधान आदि लगभग 50 विधानों का लेखन हुआ है और सभी विधान समाज में प्रसिद्धि को प्राप्त हुए हैं।

विधानों की इसी शृँखला की नवीन कड़ी के रूप में यह "भगवान बाहुबली विधान" है, जिसमें भगवान बाहुबली की महिमा से परिचित कराया गया है। पूज्य माताजी द्वारा रचित सभी विधानों में यह विशेषता रहती है कि इन पूजा-विधानों की पंक्तियों को पढ़कर भक्ति के साथ-साथ स्वाध्याय का भी पुण्य प्राप्त हो जाता है।

इस प्रकार प्रस्तुत "भगवान बाहुबली विधान" को करके आप अपने कर्मों की निर्जरा हेतु पुरुषार्थ करें तथा क्रम-क्रम से एक दिन मानव जीवन के चरम लक्ष्य की सिद्धि करें, यही आप सबके लिए मंगल प्रेरणा है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. सारिका जैन (संघस्थ)

युग की आदि में भगवान ऋषभदेव ने शाश्वत तीर्थ अयोध्या नगरी में जन्म लिया। पिता नाभिराज एवं माता मरुदेवी ने युवावस्था में भगवान ऋषभदेव का विवाह यशस्वती और सुनन्दा नाम की दो सर्वगुणसम्पन्न कन्याओं के साथ कर दिया। इनमें से रानी यशस्वती ने भरत आदि सौ पुत्र एवं ब्राह्मी नामक एक कन्या को जन्म दिया तथा सुनन्दा रानी ने बाहुबली पुत्र एवं सुन्दरी कन्या को जन्म दिया। इस प्रकार भगवान ऋषभदेव अपने 101 पुत्र एवं दो कन्याओं के मध्य ऐसे सुशोभित होते थे जैसे कि आकाश में एक चन्द्रमा और उसके चारों ओर असंख्य तारागण।

ज्येष्ठ पुत्र भरत ने चक्रवर्ती पद प्राप्त किया तथा उन्हीं भरत के नाम पर हमारे देश का नाम 'भारत" पड़ा। ब्राह्मी एवं सुन्दरी कन्याओं को भगवान ऋषभदेव ने सर्वप्रथम अक्षर विद्या एवं अंक विद्या सिखाकर विद्याओं का सूत्रपात किया तथा अन्य सभी पुत्रों को भी सभी विद्याओं एवं कलाओं में पूर्ण निष्णात कर दिया।

भगवान बाहुबलि तीर्थंकर ऋषभदेव के द्वितीय पुत्र होकर भी अद्वितीय प्रतिभा के धारी थे। वे कामदेव होने के साथ ही साथ अतिशय बलशाली थे, उनके अंदर स्वाभिमान कूट-कूटकर भरा हुआ था।

ईसवी सन् 1965 में जब पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने श्रवणबेलगोल तीर्थ पर चातुर्मास किया, तब वहाँ विराजमान 57 फुट उत्तुंग, मनोज्ञ, भगवान बाहुबली की प्रतिमा के समक्ष उन्होंने 15 दिन तक अखण्ड मौनपूर्वक ध्यान किया, जिसके माध्यम से उन्हें पिण्डस्थ ध्यान में ही तेरहद्वीपों के 458 अकृत्रिम चैत्यालयों के दर्शन हुए तथा त्रिलोकसार, तिलोयपण्णत्ति आदि शास्त्रों में ज्यों का त्यों वर्णन पाकर पूज्य माताजी के हर्ष का पार नहीं रहा। पुनः पूज्य माताजी की भावना के अनुसार उस रचना को धरती पर साकार करने का संकल्प लिया गया और आज वह सुन्दर रचना हस्तिनापुर तीर्थ पर निर्मित होकर जन-जन की श्रद्धा का केन्द्र बनी हुई है। उस चातुर्मासकाल में पूज्य माताजी ने भगवान बाहुबली की भक्ति में अनेक संस्कृत-हिन्दी की रचनाएँ कीं, जो कि बहुत प्रसिद्ध हुई हैं। उन्हीं रचनाओं में से एक भगवान बाहुबली स्तोत्र

है, जो कि 51 श्लोकों में निबद्ध है तथा प्रत्येक श्लोक के साथ उसका हिन्दी पद्यानुवाद भी है। उसी स्तोत्र को आधार बनाकर पूज्य माताजी ने इस ''भगवान बाहुबली विधान'' की रचना की है, इस विधान में कुल 156 अर्घ्य हैं जिन्हें 4 वलयों में विभक्त किया है। प्रथम वलय में 8 अर्घ्य, द्वितीय वलय में 16 अर्घ्य, तृतीय वलय में 24 अर्घ्य एवं चतुर्थ वलय में 108 नाममंत्र के 108 अर्घ्यों द्वारा पूजन की गई है। अन्त में पूज्य माताजी ने दो जयमालाओं के माध्यम से भगवान बाहुबली के सम्पूर्ण जीवन चरित का सुन्दर वर्णन किया है।

विधान की प्रारंभिक वंदना में विरोधाभास अलंकार में पूज्य माताजी ने लिखा है–

चतुराहार त्याग है तो भी, स्वात्म सुधारस पीते हैं।
क्रोध-मान से रहित अहो! फिर भी कषाय अरि जीते हैं।।
षट्कायों की दया पालते, मोहराज प्रति निर्दयता।
चरित्रव्रत गुण में ममत्व है, निज शरीर से निर्ममता।।

पूज्य माताजी द्वारा रचित भगवान बाहुबली की पूजा भक्तगण बड़े ही भावभक्ति से पढ़ते हुए देखे जाते हैं, इसमें अष्टक की दो पंक्तियाँ विशेष दृष्टव्य हैं–

हे योग चक्रपति बाहुबली! तुम पद की पूजा करते हैं।
तुम सम ही शक्ति मिले मुझको, यह ही अभिलाषा रखते हैं।।

आज प्रायः लोग कह देते हैं कि भगवान बाहुबली को शल्य थी कि मैं भरत की भूमि पर खड़ा हूँ........उनके लिए एक बात विशेष विचारणीय है कि तत्त्वार्थसूत्र की सातवीं अध्याय में 18 नं. का सूत्र है–''निःशल्यो व्रती'' अर्थात् व्रती श्रावक शल्य रहित होते हैं शल्य के तीन भेद हैं–माया, मिथ्या और निदान। भगवान बाहुबली इन तीनों प्रकार की शल्य से पूर्णतः विरहित थे अर्थात् न उनमें माया थी, न वे मिथ्यादृष्टि थे और न ही उन्होंने किसी प्रकार का निदान किया था। हाँ! उनके मन में कभी-कभी यह विकल्प हो जाता था कि मुझसे मेरे बड़े भाई भरत को क्लेश हुआ है। इन पंक्तियों को पूज्य माताजी ने पूजन की जयमाला में इस प्रकार संजोया है–

होता विकल्प यह कभी-कभी, मुझसे चक्री को क्लेश हुआ।
अतएव अपेक्षा उनकी थी, आते ही केवलज्ञान हुआ।।

ज्यों ही भरत चक्रवर्ती भगवान बाहुबली की पूजा हेतु उनके सन्मुख आए,

उसी समय भगवान बाहुबली के मन से विकल्प दूर हो गया और उन्हें दिव्य केवलज्ञान की प्राप्ति हो गई।

अतः पूज्य माताजी का हमेशा यह कहना रहता है कि भगवान जैसी महान आत्माओं के बारे में कुछ भी मिथ्या प्रलाप करने से पूर्व दिगम्बर जैन ग्रंथों का अध्ययन अवश्य करना चाहिए।

कर्नाटक प्रांत के श्रवणबेलगोला में विराजित भगवान बाहुबली को देश-विदेश की जैन जनता ही नहीं, जैनेतर बंधु भी उन्हें अपना इष्ट देवता मानकर श्रद्धा से मस्तक झुकाकर अपना जीवन सार्थक कर लेते हैं। इस विधान की रचना पूज्य माताजी ने ईसवी सन् 2006 में आयोजित भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक के समय की थी तथा संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनों द्वारा श्रवणबेलगोला में प्रथम बार इस विधान को करवाकर परम प्रसन्नता का अनुभव किया था, उन्हीं दिनों में पूज्य माताजी के पावन सानिध्य में जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में भी इस विधान को सम्पन्न किया गया।

अब पुनः वेणूर (कर्नाटक) में विराजमान भगवान बाहुबली की 35 फुट उत्तुंग प्रतिमा के बारह वर्षीय महामस्तकाभिषेक महोत्सव-28 जनवरी से 5 फरवरी 2012 के पावन अवसर पर यह विधान प्रकाशित होकर आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है, इस विधान को करके आप सभी मन-वचन-कायबल के साथ-साथ आत्मिक बल को वृद्धिंगत करें, यही इसकी सार्थकता है। अन्त में विधान की महिमा बताते हुए पूज्य माताजी ने लिखा है–

श्री बाहुबली विधान ये, जो भव्य श्रद्धा से करें।
वे रोग-शोक-दरिद्र-दुखहर, सर्वसुख-सम्पति भरें।।
मनबल-वचन बल प्राप्तकर, तनु में अतुल शक्ती भरें।
निज ''ज्ञानमति'' कैवल्य कर, फिर सिद्धिकन्या वशकरें।।

इस प्रकार आप सभी श्रावकगण इस महिमाशाली विधान को करके अपने मनोरथ की सिद्धि अवश्य करें, यही मंगल भावना है।

विधान की रचयित्री, परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान : टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि : आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991 (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति : अग्रवाल दि. जैन, गोत्र–गोयल, नाम–कु. मैना

माता-पिता : श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत : ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा : चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम–क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा : वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व : अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा : हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा–भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा : पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा : 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा : जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान–संक्षिप्त परिचय

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 में हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं–

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के माध्मय से लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है–कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर एवं चौबीसी मंदिर।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन कियेजाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं शारीरिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के सहयोगी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत "वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला" की स्थापना सन् 1972 में हुई। तब से अब तक लाखों की संख्या में ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है और निरन्तर हो रहा है। ग्रंथमाला से पाठकों को ग्रन्थ कम कीमत में प्राप्त हो सकें, इस दृष्टि से ग्रन्थमाला में एक संरक्षक योजना अगस्त सन् 1990 से प्रारंभ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत निम्न महानुभाव अब तक संरक्षक बनकर अपना सहयोग प्रदान कर चुके हैं।

शिरोमणि संरक्षक

1. **श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-6।**
2. **श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।**
3. **श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।**
4. **श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।**
5. **श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।**
6. **श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।**
7. **श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।**
8. **डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)**
9. **श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.**
10. **श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली**
11. **श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई**
12. **श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।**
13. **श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.**
14. **श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।**
15. **श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।**
16. **श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।**
17. **श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।**

परम संरक्षक

1. **श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।**
2. **डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।**
3. **श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।**
4. **श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।**
5. **श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।**
6. **श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।**
7. **श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।**
8. **श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।**
9. **श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।**
10. **श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।**
11. **स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।**
12. **श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।**
13. **श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।**
14. **श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।**
15. **श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।**
16. **श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।**
17. **श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली**
18. **श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली**

संरक्षक

1. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन एवं स्व. श्रीमती आदर्श जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
2. श्रीमती राजूबाई मातेश्वरी श्री शिखर चन्द भाई देवेन्द्र कुमार लखमी चन्द जैन, सनावद (म.प्र.)।
3. श्री चिमनलाल चुन्नीलाल दोशी, कीका स्ट्रीट, मुम्बई।
4. श्रीमती अरुणाबेन मन्नूभाई कोटड़िया, सी.पी. टैंक रोड, मुम्बई।
5. श्रीमती ताराबेन चन्दूलाल दोशी, फ्रेन्च ब्रिज, मुम्बई।
6. श्री रतिलाल चुन्नीलाल दोशी, मुम्बई।
7. स्व. श्रीमती मथुराबाई खुशाल चन्द्र जैन, द्वारा-श्री रतन चन्द खुशाल चन्द्र गाँधी के सुपुत्र श्री धन्य कुमार, अशोक कुमार, शिरीश कुमार, धर्मराज गाँधी फलटन (महा.)।

8. श्री शांतिलाल खुशाल चन्द गाँधी, फलटन (सातारा) महा.।
9. श्री अनन्त लाल फूलचन्द फड़े, अकलूज (सोलापुर) महा.।
10. श्री हीरालाल माणिकलाल गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
11. श्री जयकुमार खुशालचंद गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
12. श्रीमती बदामी देवी मातेश्वरी श्री पदम कुमार जैन गंगवाल, कानपुर (उ.प्र.)।
13. श्रीमती कमलादेवी ध.प. स्व. श्री महेन्द्र कुमार जैन, घण्टे वाले हलवाई, दरियागंज, नई दिल्ली।
14. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री श्रवण कुमार जैन, चावड़ी बाजार, दिल्ली।
15. श्री मुकेश कुमार जैन, कटरा शहंशाही, चाँदनी चौक, दिल्ली।
16. श्री हुकमीचंद मांगीलाल शाह, धानमंडी, उदयपुर (राज.)
17. श्री किरण चन्द्र जैन, कटरा धूलियान, चाँदनी चौक, दिल्ली।
18. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री महावीर प्रसाद जैन इंजी. विवेक विहार, दिल्ली
19. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री अशोक कुमार जैन (खेकड़ा निवासी), बहराइच (उ.प्र.)।
20. श्रीमती लीलावती ध.प. श्री हरीश चन्द्र जैन, शकरपुर, दिल्ली।
21. श्री दुलीचन्द जैन, बाहुबली एन्कलेव, दिल्ली।
22. श्री रतिलाल केवलचन्द गाँधी की पुण्य स्मृति में, पापुलर परिवार, सूरत (गुज.)।
23. श्रीमती भंवरीदेवी ध.प. श्री सदासुख जैन पांड्या की समृति में इन्दर चन्द सुमेरमल जैन पांड्या शिलांग (मेघालय)।
24. श्रीमती सोहनीदेवी ध.प. श्री तनसुखराय सेठी, फैन्सी बाजार, गौहाटी (आसाम)।
25. श्रीमती धापूबाई ध.प. श्री कस्तूर चन्द जैन, रामगंज मण्डी (राज.)।
26. श्री मिट्ठनलाल चन्द्रभान जैन, कविनगर गाजियाबाद (उ.प्र.)।
27. श्रीमती शकुन्तलादेवी ध.प. श्री सुरेशचंद जैन (बर्तन वाले), खुड़बुड़ा मोहल्लका, देहरादून (उ.प्र.)।
28. श्री देवेन्द्र कुमार गुणवन्त कुमार टोंग्या, बड़नगर (म.प्र.)।
29. श्री दिगम्बर जैन समाज, तहसील फतेहपुर (बाराबंकी) उ.प्र.।
30. श्री मन्नालाल रामलाल जैन डूंगरवाला, भानपुरा (मन्दसौर) म.प्र.।
31. श्री इन्दर चन्द कैलाश चंद चौधरी, सनावद (म.प्र.)।
32. श्री प्रकाश चन्द अमोलक चन्द जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
33. स्व. श्री विमल चन्द जैन, रखबचन्द दसरथ सा, सनावद (म.प्र.)।
34. श्री आजाद कुमार जैन शाह (सनावद वाले), इन्दौर (म.प्र.)।
35. श्रीमती सुषमा जैन ध.प. श्री राकेश कुमार जैन, मवाना (मेरठ) उ.प्र.।
36. श्रीमती कुसुम जैन ध.प. श्री रमेशचन्द जैन, किशनपुरी, बागपत रोड, मेरठ।

37. श्रीमती किरण जैन ध.प. श्री पदम प्रसाद जैन एडवोकेट, मेरठ (उ.प्र.)।
38. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री जिनेन्द्रप्रसाद जैन ठेकेदार, टोडरमल रोड, नई दिल्ली
39. श्रीमती क्षमादेवी जैन, मधुबन, दिल्ली।
40. श्रीमती कमलादेवी ध.प. श्री राजेन्द्र कुमार जैन टोडरका, ठाणे (महा.)।
41. श्री अजित प्रसाद जैन बब्बेजी, श्री राजकुमार श्रवण कुमार जैन, लखनऊ।
42. श्री प्रभा चन्द गोधा, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर-6 (राज.)।
43. श्री गोपीचन्द विपिन कुमार जैन, सरधना टैन्ट हाउस, गंजमंडी, सरधना।
44. श्रीमती रतनसुन्दरी देवी ध.प. श्री वीरचन्द जैन (चिकन वाले), चूड़ीवाली गली, चौक बाजार, लखनऊ।
45. डॉ. सुभाषचन्द जैन, रातानाड़ा क्लीनिक, रातानाड़ा बाजार, जोधपुर (राज.)।
46. श्री प्रमोद कुमार जैन (मुजफ्फरनगर वाले) 35 एच.वी.रोड, न्यू मार्केट, थरपकना, रांची (बिहार)।
47. श्री विजेन्द्र कुमार जैन, के.-1/20 मॉडल टाउन, दिल्ली।
48. श्री कैलाश चंद जैन, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर (राज.)।
49. श्री सुभाषचंद जैन, श्री दि. जैन पार्श्वनाथ चैत्यालय, 405 डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली।
50. श्री सुभाष चन्द जैन सर्राफ, टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.।
51. श्री चन्द्रसेन जैन, द्वारा-सुमेरचन्द, चन्द्रसेन जैन, सब्जी मण्डी, नहटौर (बिजनौर)।
52. श्री सुधीर कुमार जैन जे.ई., नन्द किशोर जैन, शारदा नहर खण्ड, शाहजहाँपुर।
53. श्री सुकुमालचंद जैन, मोती ट्रेडिंग कम्पनी, टी.आर. फुकन रोड, फैन्सी बाज़ार गौहाटी।
54. श्री अनिल पुलकित सेठी, बी 1/122, फेज-2, अशोक विहार, दिल्ली-110052।
55. श्री चन्द्रमोहन बंसल, 11, पूसा रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-5।
56. श्री गिरधर प्रसाद आमोद प्रसाद जैन, जैन वस्त्रालय, काली मार्केट, सिवान (बिहार)
57. श्री सतीश चन्द जैन, 31 सिविल लाइन, म.नं.-10, सेक्टर-2, टाइप-5 झांसी।
58. श्री स्वरूप चन्द कासलीवाल, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
59. श्री हुलास चन्द सेठी, अयोध्या शुगर मिल्स, राजा का सहसपुर, बिलारी (उ.प्र.)।
60. श्रीमती किरण देवी जैन ध.प. श्री नरेन्द्र कुमार जैन, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
61. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री प्रवीण कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
62. श्री सूरजमल पुत्र श्री विनीत कुमार जैन, मोहल्ला गंजकटरा पूरणटरा पूरणजाट, जैन विला, मुरादाबाद (उ.प्र.)।
63. स्व. श्री शिखर चन्द जैन, 'टिम्बर कमीशन एजेन्ट', शंकरगंज, हापुड़ (उ.प्र.)।
64. श्रीमती राजेश्वरी जैन मातेश्वरी श्री राकेश जैन 31, सिविल लाईन, सीतापुर।
65. श्री राजकुमार जैन, मैसर्स रविदत्त प्रेमचन्द जैन बारदाने वाले, श्यामगंज, बरेली।

66. श्री बलवीर जैन, द्वारा-जानकी एक्सटेंशन रिफाइनरी, गाँधीगंज, शाहजहाँपुर।
67. श्री पन्नालाल सेठी, डीमापुर (नागालैंड)।
68. श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, ईदगाह कालोनी, आगरा (उ.प्र.)।
69. श्री पोखपाल जैन, द्वारा-नावेल्टी मेटल इंडिया, मानसिंह गेट, अलीगढ़ (उ.प्र.)।
70. श्रीमती रश्मि जैन ध.प. श्री विजय कुमार जैन, दरियागंज, नई दिल्ली।
71. श्रीमती विमला देवी ध.प. श्री प्रमोद कुमार जैन इंजी., शाहजहाँपुर (उ.प्र.)।
72. स्व. श्रीमती कैलाशवती जैन ध.प. श्री कैलाश चन्द जैन इंजी., तोपखाना बाजार, मेरठ।
73. श्रीमती अरुण कुमार नांद्रेकर ध.प. भाऊ साहेब नांद्रेकर, मुलुन्ड (वेस्ट) मुम्बई।
74. श्री भागचन्द मनीष कुमार ठोलिया, द्वारा-किरन एजेंसी, पो. बुरहानपुर, (म.प्र.)।
75. श्री कैलाशचन्द राजकुमार जैन रावंका, पो. बिसवां (सीतापुर) उ.प्र.।
76. श्रीमती विद्यावती जैन, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली।
77. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) एवं सुपुत्र श्री मदन कुमार, प्रदीप कुमार एवं प्रवीण कुमार जैन, धर्मपुरा, गाँधीनगर, दिल्ली।
78. श्रीमती अरुणा जैन, ध.प. प्रवीन्द्र कुमार जैन, प्रीतमपुरा, दिल्ली।
79. श्रीमती पुष्पादेवी, ध.प. महेन्द्र कुमार जैन, पुष्पांजली एन्क्लेव, दिल्ली।
80. श्री बाबूलाल तोताराम जैन, भुसावल (महा.)।
81. डॉ. अनुपम जैन, सुदामा नगर, इंदौर (म.प्र.)।
82. श्री विनय कुमार जैन, ज्वैलर्स, दरीबाकलां, दिल्ली।
83. स्व. श्री आनन्द प्रकाश जैन 'शान्तिप्रिय', जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.।
84. श्रीमती राजुलबाई ध.प. श्री नेमीचन्द जैन लोहाड़े, पो. कोपरगाँव (महा.)।
85. श्री धन्नालाल गोधा, मल्हारगंज, इंदौर (म.प्र.)।
86. श्री सुनील कुमार मनोज कुमार जैन, झिलमिल कालोनी, दिल्ली।
87. श्रीमती आशा जैन ध.प. श्री राजेश कुमार जैन बरुआ सागर (उ.प्र.)।
88. श्री पारसमल डूंगरमल जी पाटनी पो. मेड़तासिटी, नागौर (राजस्थान)।
89. श्री अनिल कुमार जैन (गुड़गांव वाले) प्रियदर्शनी विहार, दिल्ली-92।
90. श्रीमती कृष्णा बाई नेमीनाथ जैन, पी. वाले, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
91. श्रीमती मंजूलता जैन ध.प. श्री प्रभात चन्द गोधा, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
92. श्री प्रमोद कुमार जैन, पारस प्रिन्टर्स, शाहदरा-दिल्ली।
93. श्री चांदमल अनिल कुमार सरावगी, किशनगंज (बिहार)।
94. कुमारी अदिती सुपुत्री श्री अपोलो जी जैन सौगानी, इंदौर।
95. श्रीमती मंजूलता ध.प. प्रभाचन्द गोधा-नया बाजार, अजमेर।

96. श्री सुचेद्र कुमार शैलेन्द्र कुमार जैन, डाल्टनगंज (झारखंड)।
97. श्रीमती जतनदेवी लक्ष्मीचंद जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)।
98. श्रीमती सखाई जैन ध.प. श्री जीतमल जैन, मड़ाना (कोटा) राज.।
99. श्री मोहित जैन पुत्र मुकेश जैन, जगन्नाथ जैन पहाड़िया, फतेहपुर (शेखावटी)राज.।
100. श्री नरेश जैन बंसल, गुड़गाँवा (हरि.)।
101. श्रीमती रतनबाई ध.प. राजेन्द्र प्रकाश कोठिया, कोटा (राज.)।
102. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री अजीत कुमार जैन, भिवाड़ी (राज.)।
103. श्रीमती प्रेमलता जैन ध.प. श्री सुशील कुमार जैन, मलाड़ (मुम्बई)।
104. श्री राजेन्द्र कुमार पंचौलिया, इंदौर (म.प्र.)।
105. स्व. श्री मोहनलाल हेमचंद गांधी, सतारा (महा.)।
106. श्रीमती आरती जैन ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन 'शीशे वाले', इलाहाबाद (उ.प्र.)
107. डॉ. श्रीमती विमला जैन 'विमल', फिरोजाबाद (उ.प्र.)।
108. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., अमरचंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)

भगवान बाहुबली विधान का नक्शा

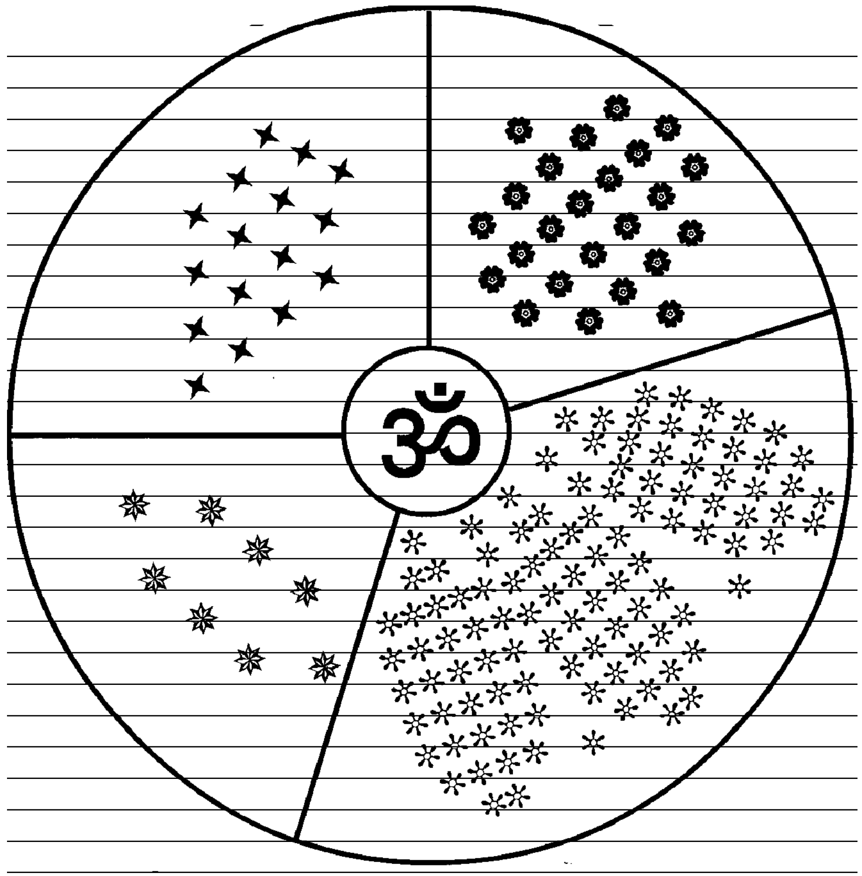

मण्डल पर चार वलय—

प्रथम वलय में	—8 अर्घ्य,	1 पूर्णार्घ्य
द्वितीय वलय में	—16 अर्घ्य,	1 पूर्णार्घ्य
तृतीय वलय में	—24 अर्घ्य,	1 पूर्णार्घ्य
चतुर्थ वलय में	—108 अर्घ्य,	1 पूर्णार्घ्य
	कुल—156 अर्घ्य,	4 पूर्णार्घ्य

भगवान बाहुबली विधान

(श्री बाहुबली वंदना)

–दोहा –

जय जय बाहूबलि प्रभो! श्री जिनवर जिनसूर्य।
नमूँ अनन्तों बार मैं, भव्यकमलिनी सूर्य।।1।।

–चौबोल छंद –

बाहुबली कैलाशगिरी पर, जाकर जिनदीक्षा लेकर।
एक वर्ष का महायोग ले, खड़े हुए निश्चल होकर।।
काम चक्रेश्वर कामभोग तज, कामदेव मद हरते हैं।
योग चक्रमय ध्यानलीन हो, योग चक्रेश्वर बनते हैं।।2।।

भक्तिभाव से दर्शन-वंदन, करते भाक्तिकगण आकर।
मानों पूजें चरण कमलयुग, नील कमल को ला-लाकर।।
ऐसा भान कराते फणधर, सर्प फिरें ऊँचे फण कर।
चरणों में बल्मीक बनायें, फुंकारें निर्भय होकर।।3।।

बड़े प्रेम से हरिणी भी, सिंहों के बच्चे पाल रही।
व्याघ्र शिशू को दूध पिलाकर, गाय अहो! फिर चाट रही।।
जात विरोधी जीव सभी, आपस में मैत्री भाव करें।
हाथी-सिंह-श्रृगाल-सर्प, खरगोश सभी मिलकर विचरें।।4।।

सौम्य मूर्ति को शांत छवी को, देख-देख अनुकरण करें।
शांत भाव से जन्मजात भी, क्रूर वैर दुर्भाव हरें।।
वन के वृक्ष पुष्प-फल युत हो, अतिशय झुकते जाते हैं।
मानों भक्ती में विभोर हो, झुक-झुक शीश नमाते हैं।।5।।

लता वल्लरी निज पुष्पों से, पुष्पवृष्टि करती रहतीं।
मधुकर के मधुर स्वर से, गुणगान सदा करती रहतीं।।
सुखद पवन बह रही सुगंधित, लता डालियाँ हिलती हैं।
मानों वनलक्ष्मी भुजप्रसरित, लय से नर्तन करती हैं।।6।।

षट् ऋतु के सब फल पुष्पादिक, फलित फूलते हैं वन में।
योगीश्वर दर्शन से मानों, हर्षित होते हैं मन में।।
वनक्रीडा के लिए वहाँ पर, विद्याधरियाँ आती हैं।
योगीश्वर को नमस्कार कर-कर विस्मित हो जाती हैं।।7।।

योगलीन तनु पर बिच्छू, सर्पादिक क्रीड़ा करते हैं।
लता भुजाओं तक चढ़ती हैं, बहु वनजंतु विचरते हैं।।
लता मंजरी हटा-हटा कर, सर्प को दूर भगाती हैं।
फिर भी मानों अधिक प्रेम से, ही आ-आ लग जाती हैं।।8।।

अहो! ध्यान है धन्य धन्य, धन धन्य योगमय मुद्रा है।
सदा खड़े हैं धर्मध्यान में, नहीं कदाचित् तंद्रा है।।
विद्याधर ज्योतिर्व्यंतर सुर, के विमान रुक जाते हैं।
उतर-उतर कर सब दर्शन-पूजन करके सुख पाते हैं।।9।।

हाथी हथिनी कमल पत्र में, प्रीती से जल लाते हैं।
भक्ति भाव से बाहुबली के, श्री चरणों में चढ़ाते हैं।।
अहो! प्रभू की अद्भुत महिमा, देख-देख सब चकित हुए।
मनो मोहिनी सुंदर छवि को, देख-देख सब मुदित हुए।।10।।

प्रिया हजारों छोड़ीं फिर भी, मुक्तिरमा से प्रीति करें।
राज्य भोग संपत्ति में निस्पृह, कर्मशत्रु से युद्ध करें।।

मनसिज हो मन को वश में कर, मनोज मद का नाश किया।
इन्द्रिय सुख में निस्पृह हो भी, निरुपम सुख की आश किया।।11।।
चतुराहार त्याग है तो भी, स्वात्म सुधारस पीते हैं।
क्रोध मान से रहित अहो!, फिर भी कषाय अरि जीते हैं।।
षट्कायों की दया पालते, मोहराज प्रति निर्दयता।
चरित्र व्रत गुण में ममत्व है, निज शरीर से निर्ममता।।12।।
सब जीवों में प्रेमभाव है, नहीं किसी से मत्सर द्वेष।
पंचम गति को मन उत्सुक है, चतुर्गती दुख से विद्वेष।।
रत्नत्रय निधि के स्वामी हैं, फिर भी आकिंचन्य अहो!।
पंच परावर्तन से डर कर, पाया निर्भय पंथ अहो!।।13।।
सब जग से वैरागी होकर, आत्म गुणों में रागी हैं।
योगी निजानंद सुख भोगी, शुद्धातम अनुरागी हैं।।
ज्ञानी ध्यानी मौनी त्यागी, अकंप निश्चल सुमेरु सम।
महामना हे महाप्रभावी, दृढ़प्रतिज्ञ हैं महानतम।।14।।
बाहुबली भुजबली दोर्बली, मनोबली हैं कायबली।
निर्बल भी प्रभु से बल पाते, आत्मबली भी महाबली।।
शीत तुषार ग्रीष्म वर्षादिक, सभी परीषह सहते हैं।
महा परीषह विजयी स्वामी, महोग्रोग्रतप करते हैं।।15।।
महा तपःप्रभाव से बुद्धी, विक्रिय सर्वौषधि ऋद्धी।
आदि सभी ऋद्धियाँ प्रगट हो, करतीं जन जन की सिद्धी।।
परन्तु योगी योगलीन हैं, नहीं प्रयोजन इनसे है।
जन-जन आकर विष रोगादिक, कष्टनिवारण करते हैं।।16।।

—दोहा—

नमूँ नमूँ बाहूबली, गुण रत्नाकर सिद्ध।
तुम पूजा चिन्तामणी, देवे नवनिधि ऋद्धि।।17।।

अथ श्री बाहुबलीपूजायज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

महा तपोबल से देवों के, आसन कंपित हो जाते।
बार-बार सब शीश झुकाते, नमस्कार हैं कर जाते।।
सब संकल्प-विकल्प रहित प्रभु, आत्म ध्यान में निश्चल हैं।
एक वर्ष उपवास पूर्ण कर, शुक्लध्यान के सन्मुख हैं।।1।।
उस ही दिन भरतेश्वर आकर, विधिवत् पूजा करते हैं।
बाहुबली तत्काल परम, केवलज्ञानेश्वर बनते हैं।।
बाहुबली का हृदय कदाचित्, स्वल्प विकल्पित हो जाता।
भरत को मुझसे क्लेश हो गया, भ्रातृप्रेम यह जग जाता।।2।।
अतः भरत के पूजन करते, केवलज्ञान प्रकाश हुआ।
निज अपराध निवारण कारण, भरत प्रथमतः नमन किया।।
केवलज्ञान सूर्य के उगते, देवों के आसन कांपे।
मुकुट कोटि झुक गये स्वयं, कल्पद्रुम से सुपुष्प बरसे।।3।।
स्वर्गों से इन्द्रादिक आकर, जय जय जय ध्वनि करते हैं।
गंधकुटी की रचना करके, प्रभु की पूजा करते हैं।।
छत्र फिरे ढुर रहे चंवर, सिंहासन दुंदुभि ध्वनि होती।
मंद सुगंधित पवन चल रही, पुष्पों की वृष्टी होती।।4।।
भरतेश्वर बहु हर्षित होकर, अनुपम पूजा करते हैं।
नहिं समर्थ है सरस्वती, जन क्या वर्णन कर सकते हैं।।
भ्रातृप्रेम धर्मानुराग, जन्मान्तर का संस्कार महान।
केवलपद की भक्ति चार के, मिलने से वैशिष्ट्य महान।।5।।
अहो! एक के ही निमित्त से, भाक्तिक जन का मन खिलता।
फिर जब चारों ही मिल जावें, हर्ष पार क्या हो सकता।।
गंगाजल की है जलधारा, गंध सुगंधित चंदन है।
मोती के अक्षत कल्पद्रुम, पारिजात के शुभ सुम हैं।।6।।
अमृतमय नैवेद्य रत्न के, दीप मलयगिरि धूप महा।
कल्पवृक्ष के फल रत्नों के, अर्घ्य चढ़ावें श्रेष्ठ अहा।।
षट्खंडाधिप भरत चक्रेश्वर, स्वयं पुजारी भक्त जहाँ।
योग चक्रेश्वर पूज्य केवली, पूजन का क्या ठाठ वहाँ।।7।।

सुर किन्नर गंधर्व खगेश्वर, नरपति पूजन करते हैं।
जय जय महाबली बाहूबलि, जय जयकार उचरते हैं।।
केवलज्ञान ज्योति से प्रभु ने, जगत चराचर देख लिया।
सबके स्वामी अंतर्यामी, सबको हित उपदेश दिया।।8।।

इन्द्र नरेन्द्र मुनींद्र मध्य में, बाहुबली प्रभु शोभ रहे।
चक्रवर्ति जित घातिकर्मजित, अनुपम सुख को प्राप्त हुए।।
मनसिज मर्दन मनुकुल वर्धन, कर्माटवि को दहन किया।
मुनिजन हृदय सरोरुह भास्कर, स्वात्मसौख्य आनंद लिया।।9।।

देश-देश में विहार करते, धर्मामृत बरसाते हैं।
केवलज्ञान सूर्य किरणों से, भव्य कमल विकसाते हैं।।
चतुर्गती परिवर्तन के दुख, से भव्यों को बचा लिया।
शिवपथ भ्रष्ट पथिक जन-जन को, मुक्तिमार्ग शुभ दिखा दिया।।10।।

–दोहा–

केवलज्ञानादर्श में, लोकालोक समस्त।
इक नक्षत्र समान है, नमूँ नमूँ सुखमस्तु।।11।।

अथ केवलज्ञानार्हन्त्यलक्ष्मीप्राप्ताय श्री बाहुबलिचरणकमलयोः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

अष्टापद गिरि पर जाकर के, त्रिकरण योगनिरोध किया।
कर्म अघाती भी विनाश कर, निःश्रेयससुख प्राप्त किया।।
परमानंद सुखास्पद अनुपम, लोक शिखर पर जाते हैं।
शतेन्द्र पूजित मुनिजन वंदित, त्रिजग ईश कहलाते हैं।।1।।

जय जय हे त्रैलोक्य शिखामणि! जय इक्ष्वाकु वंश भूषण!।
जय जय जन्म जरामृति भयहर! जय जय मोह मल्ल चूरण!।
जय जय कर्मशत्रु मदभंजन, नित्य निरंजन नमो नमो।
सिद्ध शुद्ध परमात्म चिदंबर! चिन्मय ज्योती नमो नमो।।2।।

–दोहा–

श्रीबाहूबलि सिद्धप्रभु, परमानंद सुखकार।
स्वात्मसिद्धि के हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार।।3।।

अथ परमसिद्धिपदप्राप्ताय श्रीबाहुबलिचरणकमलयोः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्री बाहुबली पूजा

–स्थापना-शंभु छंद–

वृषभेश्वर के सुत बाहुबली, प्रभु कामदेव तनु सुन्दर हैं।
मुनिगण भी ध्यान करें रुचि से, नित जजते चरण पुरंदर हैं।।
निज आतमरस के आस्वादी, जिनका नित वंदन करते हैं।
उन प्रभु का हम आह्वानन कर, भक्ती से अर्चन करते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक–शंभु छंद–

भव भव में जल पीते-पीते, अब तब नहिं तृषा समाप्त हुई।
इस हेतू जिनपद पूजूँ मैं, जल से यह इच्छा आज हुई।।
हे योग चक्रपति बाहुबली, तुम पद की पूजा करते हैं।
तुम सम ही शक्ति मिले मुझको, यह ही अभिलाषा रखते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तन धन कुटुम्ब की चाह दाह, नितप्रति मन को संतप्त करे।
चंदन से जिनपद चर्चत ही, मन को अतिशय संतृप्त करे।।
हे योग चक्रपति बाहुबली, तुम पद की पूजा करते हैं।
तुम सम ही शक्ति मिले मुझको, यह ही अभिलाषा रखते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आतम सुख को कर्मों ने, बस खंड-खंड कर दुःख दिया।
निज सुख अखंड मिल जावे बस, उज्ज्वल अक्षत से पुंज किया।।
हे योग चक्रपति बाहुबली, तुम पद की पूजा करते हैं।
तुम सम ही शक्ति मिले मुझको, यह ही अभिलाषा रखते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु कामदेव होकर के भी, अरि कामदेव को भस्म किया।
इस हेतु सुगंधित पुष्प बहुत, तुम चरणकमल में चढ़ा दिया।।
हे योग चक्रपति बाहुबली, तुम पद की पूजा करते हैं।
तुम सम ही शक्ति मिले मुझको, यह ही अभिलाषा रखते हैं।।4।।
ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु एक वर्ष उपवास किया, हुई कायबली ऋद्धी जिससे।
मेरा क्षुध रोग विनाश करो, पक्वान्न चढ़ाऊँ बहुविध के।।
हे योग चक्रपति बाहुबली, तुम पद की पूजा करते हैं।
तुम सम ही शक्ति मिले मुझको, यह ही अभिलाषा रखते हैं।।5।।
ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर शिखा जगमग करती, बाहर में ही उद्योत करे।
दीपक से तुम आरति करके, अंतर में ज्ञान उद्योत करे।।
हे योग चक्रपति बाहुबली, तुम पद की पूजा करते हैं।
तुम सम ही शक्ति मिले मुझको, यह ही अभिलाषा रखते हैं।।6।।
ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वर धूप सुगंधित खे करके, संपूर्ण पाप को भस्म करें।
निज गुण समूह की प्राप्ति हेतु, जिन पद पंकज की भक्ति करें।।
हे योग चक्रपति बाहुबली, तुम पद की पूजा करते हैं।
तुम सम ही शक्ति मिले मुझको, यह ही अभिलाषा रखते हैं।।7।।
ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मनवांछित फल पाने हेतू, बहुतेक देव का शरण लिया।
नहिं मिला श्रेष्ठ फल अब तक भी, इस हेतु सरस फल अर्प दिया।।
हे योग चक्रपति बाहुबली, तुम पद की पूजा करते हैं।
तुम सम ही शक्ति मिले मुझको, यह ही अभिलाषा रखते हैं।।8।।
ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन तंदुल पुष्प चरू, दीपक वर धूप फलों से युत।
क्षायिक लब्धी हित ''ज्ञानमती'', यह अर्घ समर्पण करूँ सतत।।

हे योग चक्रपति बाहुबली, तुम पद की पूजा करते हैं।
तुम सम ही शक्ति मिले मुझको, यह ही अभिलाषा रखते हैं।।9।।
ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

शांतीधारा मैं करूँ, बाहुबली पदपद्म।
आत्यंतिक सुख शांतिमय, मिले निजातम सद्म।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जुही चमेली केतकी, चंपक हरसिंगार।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, मिले सौख्य भंडार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

(प्रथम वलय के आठ अर्घ्य)

–दोहा –

बाहुबली भगवान हैं, गुण अनन्त के नाथ।
पुष्पांजलि से पूजकर, भविजन हुए कृतार्थ।।1।।

अथ मंडलस्योपरि प्रथमवलये अष्टकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

सिद्धिप्रदं मुनिगणेन्द्र-शतेन्द्रवंद्यं,
कल्पद्रुमं शुभकरं धृतिकीर्तिसद्म।
पापापहं भवभृतां भववार्धिपोत-
मानम्य पादयुगलं पुरुदेवसूनोः।।1।।

–चौबोल छंद –

सिद्धिप्रद मुनिगण से वंदित, सौ इन्द्रों से नित वंदित।
उत्तम कल्पवृक्ष शुभकारी, धृति कीर्ति के सदन महित।।
भवभृतजन के पापहरण, प्रभु भव जलधि के पोत महान।
वृषभदेवसुत बाहुबली के, चरण कमल में करूँ प्रणाम।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिप्रदायकाय संसारसमुद्रोत्तरणपोतायमानाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

सप्तर्द्धिशालिगणिनां स्तुतिगोचरस्य,
युद्धत्रये विजित-विक्रमचक्रपस्य।
ध्यानैकलीनतनुनिश्चलवत्सरस्य,
तस्य प्रभोरहमपि स्तवनं विधास्ये।।2।। युग्मं।

सप्तऋद्धियुत चार ज्ञानधर, गणधर भी स्तुति करते।
दृष्टि-जल्ल औ मल्ल युद्ध में, चक्रवर्ति को भी जीते।।
एक वर्ष तक ध्यानलीन हो, निश्चल तन से खड़े प्रभो।
ऐसे श्री बाहुबली जिन की, मैं भी स्तुति करूँ अहो।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वर्द्धिसमन्वितमहासाधुस्तुतिप्राप्ताय संवत्सरध्यानलीनाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

हे नाथ! कर्मवशतो हतशक्तिबुद्धिः,
स्तोतुं तथापि तव भक्तिवशाद् यतेऽहं।
भेकोऽपि शक्तिमसमीक्ष्य जवेन भक्त्या,
गच्छन् मृतः सुरपदं ननु किं न वाप्नोत्।।3।।

हे जिन! कर्म उदय से मैं हूँ, शक्तिहीन औ बुद्धिविहीन।
फिर भी तव भक्ती वश होकर, स्तुति करने को उद्यमलीन।।
शक्ति विचारे बिन मेंढक भी, भक्ती वश हो तुरत चला।
मारग में ही मरकर सुरपद, पाया क्या नहिं अहो भला।।3।।

ॐ ह्रीं शक्तिबुद्धिहीनैः भक्तिवशस्तुतिकरणोद्यतजनवांछितफलप्रदानसमर्थाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

त्वन्नामपूतरसना लघु दिव्यवाणीं,
हृद्यां त्रिलोकजनवश्यकरीं विधत्ते।
स्तोत्राय ते रुचिरवर्णपदा मनोज्ञाः,
तस्याः कथं कतिपया न वशीभवंति।।4।।

प्रभु तव नाम मंत्र से पावन, रसना झट ही प्राप्त करे।
मनहर त्रिभुवन जन वशकारी, दिव्य सुवाणी पाप हरे।।

हे भगवन्! तव संस्तव हेतू, रुचिर वर्ण पद से मनहर।
उस रसना के वश नहिं होंगे, क्या कतिपय सुन्दर अक्षर।।4।।

ॐ ह्रीं त्वत्संस्तवनपवित्रसर्वजनवश्यकारिणीवाणीप्राप्ताय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

किं शक्यते गुणकथा जिन! मद्विधैस्ते,
साक्षादहो! सुरगुरुः क्षमते न वक्तुं।
उद्गच्छतो वियति पक्षिगणानचक्षुः,
मीयेत चेद् व्रजति किं नहि हास्यतां सः।।5।।

हे जिन! मुझ जैसे तव गुण का, वर्णन क्या कर सकते हैं?
जब सुरगुरु भी सचमुच तव, भक्ती में अक्षम रहते हैं।।
अहो! गगन में उड़ते पक्षी-गण की यदि अंधे जन भी।
गणना करते हँसी पात्र, क्या होंगे नहीं मूढ बुद्धी।।5।।

ॐ ह्रीं अनन्तगुणकथनासमर्थभव्यजनाभीप्सितफलप्रदाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

आस्तां जिनेन्द्र! तव संस्तवनं हि तावत्,
नामापि नूनमिह सिद्धरसायनं स्यात्।
कामार्थदाय्यभयदायि च देहभाजां,
पीयूषबिंदुरपि तृप्तिकरो न किं वा।।6।।

हे जिनवर! तव संस्तव की तो, बात दूर ही रहे मगर।
सचमुच नाम मंत्र भी तेरा, सिद्ध रसायन से बढ़कर।।
जग जन को इच्छित फलदायी, अभयदान भी देता है।
क्या अमृत का एक बिंदु भी, तृप्तीप्रद नहिं होता है।।6।।

ॐ ह्रीं त्वन्नाममात्रसर्वसिद्धिकारकामृताय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

हे कामदेव! शुभवर्ण हरित्सुगात्र!
केनोपमां तव करोमि समोऽपि कश्चेत्।

नूनं भवान् खलु भवादृश एव लोके,
तृप्यंति नो जनदृशो मुहुरीक्षमाणाः।।7।।

हे प्रभु कामदेव! अति सुन्दर, हरित वर्ण शुभ तनु शोभित।
किससे उपमा करूँ तुम्हारी, यदि तुम सम जन हों इस जग।।
निश्चित ही प्रभु तुम सम तुमही, इस जग में सुन्दर अतएव।
बार-बार जन के दृग तुमको, लखते तृप्त न होते देव।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वोपमानोपमेयविरहिताय कामदेवपदप्राप्ताय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

नाथ! त्वदंघ्रियुगसंततसेवमानाः,
ज्योतिर्गणा अगणिता रविचंद्रमुख्याः।
दीप्तिस्त्वसंख्यसुरवृंदमतीत्य तेऽस्ति,
तुल्या भवंति किमु ते तवदीप्तिकान्त्या।।8।।

नाथ! आपके चरण कमल की, नित सेवा करने वाले।
सूर्य-चंद्र हैं मुख्य जिन्हों में, अगणित ज्योतिष सुर सारे।।
तव तनु दीप्ति असंख्य सुरों की, दीप्ति उलंघन कर शोभे।
देवदेव! तव दीप्ति कांति के, तुल्य देवगण नहिं होते।।8।।

ॐ ह्रीं सूर्यचन्द्राधिकदीप्तिधारकाय ज्योतिष्कदेवादिभिर्वंदिताय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

—पूर्णार्घ्य—

वक्त्रं त्वदीयधवलोज्ज्वलकीर्तिकांतं,
रम्यं विकारभयशोकविषाददूरं।
स्मेरं सुसौम्यमतुलं सुभगं प्रशांतं,
हर्षोत्करैर्जनमनांसि हरत्यजस्रं।।9।।

नाथ! आपका मुख है धवलोज्ज्वल कीर्ती कांती से कांत।
अति रमणीय विकार शोक भय, मद विषाद से दूर नितांत।।
मंद हास्य युत अतुल सुभग है, सौम्य शांतमय महाप्रशांत।
हर्षोत्कर से नित प्रति सब जन, मन को हरता है भगवंत।।9।।

—दोहा—

प्रभु अनन्तगुण के धनी, ध्यानचक्रधर धीर।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय के, पाऊँ मैं भवतीर।।10।।

ॐ ह्रीं भयशोकविषादविरहित-मंदमंदप्रहसितायमानास्यसहिताय सिद्धपदप्राप्ताय श्री बाहुबलिस्वामिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।।

(द्वितीय वलय के 16 अर्घ्य)

—दोहा—

ध्यान चक्र के अधिपती, बाहुबली मुनिनाथ।
सुमन चढ़ाकर पूजहूँ, नमूँ नमाकर माथ।।

अथ मंडलस्योपरि द्वितीयवलये षोडशकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ध्यानस्थिते त्वयि विभो! शुकवर्णकांतं,
त्वां वीक्ष्य मुक्तिललना छलतो लतानां।
मन्येऽहमेत्य समवर्णमवेत्य तुष्टा,
आश्लिष्यति स्म रहसि स्थितमत्र मोदात्।।1।।

विभो! ध्यान में लीन आपकी, शुक समान है कांति महान।
लता बहाने मुक्ति रमा ही, मानों आई निकट सुजान।।
रूप वर्ण तव हरित देख, समवर्ण समझ संतुष्ट हुई।
रहसि खड़े प्रभु देख तुम्हें, आलिंगन करती मुदित हुई।।1।।

ॐ ह्रीं हरिद्वर्णकान्तिधृत्माधवीलतावेष्टित स्थिरदेहाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

योगात्प्रसन्नहृदये त्वयि संस्मितास्यः,
वल्ल्याभिवेष्टिततनुः पृथुकल्पवृक्षः।
लोकोत्तराभ्युदयसौख्यफलं ददासि,
त्वामद्भुतद्रुमत एव जनाः श्रयंति।।2।।

प्रभो! योग से प्रसन्न मन तव, संस्मित मुख प्रकटित करता।
बेलों से तनु वेष्टित उत्तम, अद्भुत कल्पवृक्ष दिखता।।
लोकोत्तर अभ्युदय सौख्य फल, मुक्तीफल को भी देते।
अनुपम कल्पवृक्ष लख प्रभु को, अतः सभी आश्रय लेते।।2।।

ॐ ह्रीं योगलीनप्रसन्नहृदयसंस्मितमुखकमलाय लोकोत्तरसौख्यदान-समर्थाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

विघ्नौघजित्! मरकताभ! समंततस्त्वां,
संवेष्ट्य भीषणफणा विषदर्पजुष्टाः।
वल्मीकरन्ध्रगतनिर्गतकृष्णनागाः,
दीर्घं त्वदीयपृथुदेहगिरावदीव्यन्।।3।।

हे विघ्नौघविजित्! मरकतमणिदेह! आपके चारों ओर।
वेष्टित करते भीषण फणधर, विष से युक्त भयंकर घोर।।
वामी के छिद्रों से निकले, काले नाग बहुत दिन तक।
प्रभु के इस विशाल तनु पर्वत, ऊपर क्रीड़ा करें मुदित।।3।।

ॐ ह्रीं ध्यानैकतानचित्तभीषणसर्पगणवेष्टिताय सर्वविघ्नहराय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

आजन्मजातबहुवैरविकारभावाः,
सिंहप्रभृत्यखिलजंतुगणा अपीत्थं।
ध्यानप्रभाववशतस्तव हिंस्रभावं,
त्यक्त्वा मिथः परमशांतमुपासत त्वां।।4।।

जन्मजात बहु बैर भावयुत, अति विकार को प्राप्त जभी।
सिंह-हरिण, नकुलादि सर्पगण, जात विरोधी जीव सभी।।
अहो! ध्यान के ही प्रभाव से, क्रूर भाव को तजते हैं।
परम शांत प्रभु को उपासते, प्रीति परस्पर भजते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं ध्यानप्रभावनिमित्तजन्मजातवैरवर्जितसिंहमृगादिगण-सेवितपादपद्माय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

त्वामाश्रितस्य जिन! मे कटुकर्मबंधाः,
क्रूरत्वमत्र जहतु त्वरमद्भुतं किं।
स्वामिन्नसातविविधप्रकृतीः सुभक्तिः,
संक्रामयत्यपि शुभे कथितं त्वयैव।।5 (कुलकं)।।

हे जिन! तेरा आश्रय लेते, मेरे भी कटु कर्म विपाक।
अशुभ क्रूर फल नहिं देवें यदि इसमें विस्मय क्या हे नाथ।।
स्वामिन्! तेरी सद्भक्ती तो, विविध असात प्रकृतियों को।
शुभ प्रकृती में संक्रम करती, ऐसा तुमने कहा अहो!।।5।।

ॐ ह्रीं भक्तिप्रभावादसातादिप्रकृति-सातास्वरूपपरिणमनकारकाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ध्यानस्थिते सति सुरासनकंपमानाः,
जाता मुहुः सुरगणाश्च नतिं व्यतन्वन्।
ध्यानैकधुर्य जिन! ते हृदि धारकाणां,
कंपीभवंति भविनां किल कर्म चौराः।।6।।

ध्यान लीन जब खड़े आप थे, सुरगण के आसन कंपे।
पुनः पुनः वे सुरगण आते, नमस्कार करते रहते।।
हे ध्यानैकधुर्य जिन! तुमको, जो मन में धारण करते।
निश्चित ही उन भव्यजनों के, कर्म चोर कंपित होते।।6।।

ॐ ह्रीं ध्यानप्रभावात्सुरासनकंपविधायकाय सर्वकर्मनिर्मूलनसमर्थाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

देवा उपेत्य विनमंति भजंति भक्त्या,
चौरा अपेत्य भयतः! प्रपलायमानाः।।
लोके भवंति च विभोऽन्तरमेतदेव,
अस्त्येव वात्र महिमा महतामचिन्त्यः।।7 (युग्मं)।।

सुरगण आकर भक्तीपूर्वक, भजते नमस्कार करते।
तव भक्ती से कर्म चोर, भयभीत हुए झटपट भगते।।

सुर आसन औ चोर उभय के, कंपन में इतना अंतर।
अथवा श्रेष्ठजनों की महिमा, है अचिन्त्य जग में सुखकर।।7।।

ॐ ह्रीं देवासुरमनुष्यवंदितचरणकमलाय कर्मशत्रुपलायनकारकाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

शाल्यंकुराभतनु बाहुबलीश! योगे,
लीनं लताभिरहिभिः परितः सुजुष्टं।
त्वां वीक्ष्य खेचररमा बहु विस्मयेन,
भक्त्या निवारणपरा मुहुरेव तत्र।।8।।

शालिधान अंकुर सम सुंदर, रूप अहो! बाहूबलि ईश।
योग लीन में लता और, सर्पों से वेष्टित प्रीति सहित।।
ऐसे प्रभु को देख चकित हो, विद्याधरियाँ विस्मय युत।
पुनः पुनः उन लता सर्प को, दूर करें थीं भक्ती युत।।8।।

ॐ ह्रीं विद्याधरीभिर्लतादिनिवारणभक्तिप्राप्ताय सर्वजनविस्मयकारि-तपश्चरणसमन्विताय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

कार्यैश्च तैः किमिति विघ्नमतो न ते प्राक्,
पश्चान्न लाभमभवत् समतोभयोर्हि।
ता एव भक्तिरसभारभरैर्मुनीन्द्र!
स्वासां भवस्थिति लघु स्वत एव चक्रुः।।9।।

इन कार्यों से क्या प्रभु तुमको, लता सर्प से विघ्न न था।
नंतर लाभ न माना तुमने, दोनों में समभाव सु था।।
उन विद्याधरियों ने केवल, भक्ति भाव रस से पूरित।
स्वतः स्वयं के भव कम करके, भक्ती का फल लिया उचित।।9।।

ॐ ह्रीं परमसाम्यसुधारसपानतृप्ताय स्वभवस्थितिघातकाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

संवत्सरैकतनुनिश्चल! शल्यदूर,
त्वद्ध्यानकृष्टहृदया महतादरेण।

त्वां बुद्धिविक्रियरसौषधिचारणाद्याः,
सर्वर्द्धयोऽपि वृणुतेस्म किमद्भुतं तत्।।10।।

योग लीन प्रभु एक वर्ष तक, निश्चल तनु हे शल्य रहित।
श्रेष्ठ ध्यान से आकर्षित हो, मानो बहु आदर से युत।।
बुद्धि विक्रिया रस औषधि, चारण आदी ऋद्धियाँ सभी।
प्रभो! आपको वरण किया था, उसमें कुछ आश्चर्य नहीं।।10।।

ॐ ह्रीं मायामिथ्यानिदानशल्यविरहिताय एकवर्षध्यानलीनतनुनिश्चलाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

त्वद्ध्यानहृष्टवनजाश्च षडर्तुजाताः,
वृक्षाः सुपुष्पफलभारनताः बभूवुः।
वृष्टिं त्वयीश! कुसुमैश्च फलैश्च नत्या,
पूजां नतिं विदधिवंत इव प्ररेजुः।।11।।

आप ध्यान से हर्षित वन के, षट् ऋतु के तरु बेल सभी।
पुष्प-फलों से सहित भार से, नत हो मानों झुकें सभी।।
पुष्पों से वर्षा तव ऊपर, फल से पूजा भक्ति करें।
झुकें भार से प्रणमन करते, शोभें मानों भक्ति भरें।।11।।

ॐ ह्रीं ध्यानप्रभावात्षडर्तुपुष्पफलयुगपदुत्पत्तिनिमित्तकाय श्रीबाहुबलि-स्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

उत्तुंगदेह! भरताधिपजित्! तवप्राक्,
शिष्यो बभूव भरतेश्वरचक्ररत्नं।
रत्नत्रयं पुनरवाप्य सुसिद्धिचक्रं,
मोहैकजित्! त्रिभुवनैकगुरुर्बभूव।।12।।

सवा पाँच सौ धनुष उच्च तनु, हे भरताधिपजित्! योगीश!
भरतचक्रि का चक्ररत्न तव, शिष्य बना था सबको जीत।।
पुनः आपने सिद्धिचक्रमय, रत्नत्रय को प्राप्त किया।
हे मोहैकविजित! बाहूबलि!, त्रिभुवन के गुरु हुए अहा।।12।।

ॐ ह्रीं पंचशतपंचविंशतिधनुःप्रमाणोत्तुंगदेहाय भरतधिपजिते श्रीबाहुबलि-स्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

छत्रत्रयासनसुचामरपुष्पवृष्टि-
भाश्चक्रदिव्यवच-आनकतर्वशोकैः।।
सत्प्रातिहार्यविभवैर्जिन! भाससे त्वं,
देवासुरैर्नरगणैश्च वृतोऽप्यजस्रं।।13।।

छत्रत्रय सिंहासन चामर, पुष्पवृष्टि भामंडल है।
दिव्यध्वनि औ दुंदुभि बाजे, तरु अशोक भी शोभ रहे।।
हे जिन! प्रातिहार्य ये आठों, तव प्रभुता बतलाते हैं।
देव-असुर-मनुजादिक गण से, वेष्टित अक्षय सुखमय हैं।।13।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्ट्यादिमहाप्रातिहार्यप्राप्ताय सुरासुरनरेन्द्रादि-पूजितपादपद्माय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

अस्मिन्ननादिभवकाननदावमध्ये,
दंदह्यमानभयभीतजनस्य दुःखं।
भक्तिर्विभो! तव निमूलयितुं क्षमा चेत्,
को वा तया नहि विनश्यति तापहेतुः।।14।।

इस अनादि भव कानन में, दावानल अग्नी भड़क रही।
उसमें सब संसारी प्राणी, झुलस रहे भयभीत अती।।
विभो! भक्ति तव उन सब दुख को, निर्मूलन में सक्षम हो।
पुनः जगत् का कौन दुःख जो, उस भक्ती से दूर न हो।।14।।

ॐ ह्रीं संसाराटवीमध्यभ्रमणशीलप्राणिगणोद्धरणसमर्थाय श्रीबाहुबलि-स्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

जन्मान्तरार्जितनिधत्तनिकाचिताद्याः,
बंधाश्च घोरतर-तापकरा वृथैव।
कुर्वंति ते कटुकदुःखमसत्यनिंदां,
निघ्नंति शस्त्रमिव नाथ! विपाककाले।।15।।

भव-भव में अर्जित अशुभादिक, कर्म निधत्त निकाचित जो।
घोर भयंकर दुःख तापप्रद, नाथ! उदय में आते जो।।

वे असत्य निंदा कटु फल, देते बिन दिये नहिं नशते।।
उदय काल में शस्त्र घात सम, हृदय विदीरण भी करते।।15।।

ॐ ह्रीं अनन्तजन्मसंचिताशुभायशस्कीर्ति-आदिसर्वकर्मविनाशनसमर्थाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

त्वद्बिम्बनिर्मल-मुखाम्बुजवीक्षणेन,
पुण्यांकुरोत्पुलककंचुकितांगभाजः।
नाशं प्रयांति लघु तेऽपि हि संशयः कः,
सिद्धांतसूत्रकथितं कथमन्यथा स्यात्।।16 (युग्मं)।।

प्रभु तव प्रतिमा के निर्मलमुख, सरसिज के अवलोकन से।
पुण्यांकुर से पुलकित जिनका, रोमांचित तनु होता है।।
वे जन झटिती अशुभ कर्म को, नष्ट करें है संशय क्या।
भक्ति निकाचित कर्म काटती, हैं सिद्धांत वचन फिर क्या।।16।।

ॐ ह्रीं भगवन्मुखकमलावलोकनमात्रेण सर्वासाताकर्मघातनसक्षमाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

पूर्णार्घ्य – ***उद्विज्य घोरभयद-व्यसनाम्बुधेर्मा***
दुःखाश्रुपूरनिवहैः कृतवक्त्रसान्द्रं।
वीक्ष्यागतं परमकारुणिकस्य तेऽन्तः,
स्वामिन्! कथं द्रवति नो कथय त्वमेव।।17।।

घोर भयंकर दुख वारिधि से, मैं उद्विग्नमना होकर।
आया हूँ प्रभु पास आपके, दुःखाश्रू से मुंह धोकर।।
देख मुझे हे परम कारुणिक! हृदय आपका द्रवित न हो।
क्या ऐसा हो सकता है? हे नाथ! आप ही मुझे कहो।।17।।

दोहा – **श्री बाहूबलिसिद्धप्रभु! जजूँ आप पदपद्म।**
हरो अमंगल विघ्नघन, हो मुझ अपुनर्जन्म।।17।।

ॐ ह्रीं भवदुःखसंतप्तजनानां परमकारुणिकत्वभावपरिणताय श्रीबाहुबलि-स्वामिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।।

(तृतीय वलय के 24 अर्घ्य)

–दोहा–

घात घातिया कर्म को, किया ज्ञान को पूर्ण।
पुष्प चढ़ाऊँ आप पद, करो हमें सुख पूर्ण।।

अथ मंडलस्योपरि तृतीयवलये चतुर्विंशत्कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

कुत्र प्रयामि तव पादयुगं विहाय,
लोकेऽत्र दुःखिजनवत्सल! मे त्वमेव।
आप्तात् जनान् खलुनिरीक्ष्य समस्तदुःख-
मुद्वेल-माव्रजति नूनमिह प्रसिद्धं।।1।।

नाथ! आपके चरणांबुज को, छोड़ कहाँ अब जाऊँ मैं?
हे दुःखितजनवत्सल! मेरे, तुमही नाथ हो इस जग में।।
आप्त जनों को देख दुखी के, सभी दुःख इक क्षण में ही।
प्रकटित हो उद्वेलित होते, जग में यह सूक्ती सच ही।।1।।

ॐ ह्रीं भक्तजनवत्सलगुणसमन्विताय सर्वभवदुःखनिवारणसमर्थाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

जानच्चराचर जगज्जिन! गोपितैर्हि,
विज्ञापितैः किमधुना त्वमवैषि सर्वं।
क्षिप्रं विधत्स्व करुणां मयि हे कृपाब्धे!
रक्ष प्रसीद नय शांतिमनंतिमां मां।।2।।

हे जिन! जगत चराचर जानो, कहीं छिपाना क्या तुमसे।
क्या विज्ञप्ती गुप्त रखूँ अब, प्रभु तुम सभी ज्ञान रखते।।
कृपासिंधु हे कृपा करो झट, मेरी भी रक्षा कीजे।
हो प्रसन्न अब मुझ पर भगवन्! अनंत शांती को दीजे।।2।।

ॐ ह्रीं सर्वचराचरज्ञायककैवल्यज्ञानप्राप्ताय भव्यजनशरणप्रदायकाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

सर्वस्य पार्श्व इह नाथ! चिरं भ्रमित्वा,
श्रांतोऽस्मि केऽपि नहि दुःखनिवारणेऽर्हाः।

श्रुत्वा सकृज्जिनरवे! प्रथितं यशस्ते,
पादाम्बुजं दृढमना अहमाश्रितोऽस्मि।।3।।

नाथ! सभी के पास गया मैं, इस जग में चिर भ्रमण किया।
दुःख निवारण में समरथ नहिं, कोई अब मैं श्रांत हुआ।।
बार-बार तव कीर्ती सुनकर, हे जिनरवि! दृढ़मन होकर।
मैंने तव चरणांबुज का अब, आश्रय लिया नाथ! सुखकर।।3।।

ॐ ह्रीं संसारभ्रमणभीतशरणागतभव्यजनरक्षकाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

यद् यद् मया भवभवे जिन! दुःखमाप्तं,
त्रैलोक्यवित्! त्वमपि वेत्सि तदेव सर्वं।
सर्वेश! संप्रति भवान् भवतां यदेव,
कर्तव्यमस्ति कुरुतां मम तत्प्रमाणं।।4।।

हे जिनवर! भव-भव में मैंने, जो जो दुःख पाये जैसे।
त्रिभुवनवित्! उन सब दुःखों को, तुम्हीं जानते हो वैसे।।
सबके ईश! आप हैं इस क्षण, जो कर्तव्य आपका हो।
वही कीजिये नाथ! मुझे भी, होगा वही प्रमाण अहो।।4।।

ॐ ह्रीं भगवच्चरणकमलसमर्पणभावसहितभव्यजनवत्सलाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

न्याय्यं व्यतिक्रमितुमीश! जनोऽप्रबुद्धः,
शक्नोति किंतु भगवन्! त्वमिहाखिलज्ञः।
''त्रैलोक्यनाथ''! इति विश्रुत एव तस्मात्,
न्यायं कुरुष्व मम कर्मकदर्थितस्य।।5।।

अज्ञानी जन न्याय व्यतिक्रम, कर सकते हैं हे भगवन्!
किंतु आप सर्वज्ञ देव हैं, त्रिभुवन पति भी हैं भगवन्।।
इस जग में है यही प्रसिद्धी, त्रिभुवन रक्षक नाथ तुम्हीं।
कर्मोदय से पीड़ित मेरा, न्याय करो झट सही-सही।।5।।

ॐ ह्रीं स्वकर्मनिर्मितदैवशत्रुप्रदत्तानन्तदुःखनिवारणसक्षमाय श्रीबाहुबलि-स्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

विक्षेपणध्वनिपटुप्रभुभक्तियंत्रात्,
निर्गत्य दूरविभुकर्णपथे विशंति।
शब्दास्तवेश! यदि वा किमु तैर्विरागात्,
देवास्तु शासनरताः खलु कर्णयंति।।6।।

ध्वनि विक्षेपण कुशल भक्तिमय, यंत्र नाथ! उससे प्रगटें।
शब्द वर्गणा दूर प्रभू के, चरणों तक निश्चित पहुँचें।।
अथवा उन शब्दों से क्या प्रभु, तुमको वीतरागता है।
तव भक्ती वश जिनशासन में, रत सुरगण सुन लेते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं भक्तिभावप्रेरितनानाशब्दवर्ण रचितस्तुतिकारकभाक्तिकजनसर्व-वांछितफलदायकाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

त्वत्पादपद्ममथवा समुपाश्रितानां,
लोकातिशायिपृथुपुण्यसमर्जितानां।
शीर्यंत एव तरसा विपदः स्वयं हि,
बद्धं च मोक्तुमपि कारणमेव भावाः।।7।।

अथवा जिन! तव चरण कमल का, नित आश्रय लेने वाले।
लोकोत्तर अतिशयशाली, बहु पुण्यबंध करने वाले।।
भव्यजनों के सभी कष्ट, स्वयमेव नष्ट हो जाते हैं।
चूँकि बंध औ मुक्ती हेतू, भाव मुख्य ही कारण हैं।।7।।

ॐ ह्रीं त्वच्चरणकमलोपासकातिशायिपुण्यप्राप्ताय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

हे योगचक्रभृदिहेष्टवियोगनेष्ट-
संयोगजातमपि दुःखमसून् निहंति।।
जंतोर्यदीश! भुवनेष्टमनिष्टशून्यं,
पादाम्बुजं तव भजेत् किमु तस्य नेष्टः।।8।।

योगचक्रधर! इस जग में हैं, इष्टवियोग-अनिष्टसंयोग।
इनसे हुआ दुःख जीवों के, प्राणों का भी करे वियोग।।

तव पादाम्बुज सब अनिष्ट से, शून्य जगत् में इष्ट कहे।
यदि उनका जग आश्रय लेवे, उनको क्या अनिष्ट होवे?।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वार्तध्यानविरहितसर्वेष्टफलप्रापणदक्षाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

पादांतिकेऽपि तव पातुरितस्ततो मे,
हा! हंत! धावति मनः करवाणि किं नु।
वास्तां रतिस्त्वयि निमेषमशेषपापं,
अग्निस्फुलिंग इव सा दहतीह किं न।।9।।

हे रक्षक! तव चरण निकट में, भी मेरा मन इधर-उधर।
घूम रहा है हाय! हाय! मैं, कहो करूँ क्या अति दुष्कर।।
अथवा रहने दो प्रभु तुझ में, प्रीती निमिष मात्र की जो।
अग्नि कणी सम अखिल पाप को, क्यों नहिं भस्म करेगी वो।।9।।

ॐ ह्रीं मनःस्थिरीकरणसमर्थप्रभुभक्तिकारकभव्यजनसंतुष्टिकराय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

सम्यक्त्वदां प्रतिकृतिं तव ये पृथिव्यां,
निर्मापयंति जिनपुंगव! भक्तिभाजः।
धन्यास्त एव भुवनत्रयक्षोभकारि,
बध्नंति तीर्थकरपुण्यमहो! किमन्यैः।।10।।

हे जिनपुंगव! भक्ति भाव वश, इस पृथ्वी पर जो भविजन।
तव मूर्ती सम्यक्त्व प्रदायी, निर्मापित करते गुणमणि।।
वे ही मनुज धन्य इस जग में, भुवनत्रय में क्षोभकरी।
तीर्थंकर प्रकृती को बांधें, अहो! अन्य क्या पुण्यकरी?।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिमूर्तिदर्शनप्रभावात्सम्यक्त्वरत्नप्राप्तकरणसमर्थाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

व्याप्तत्रिलोकसितकीर्तिसुमाधवीभि-
र्जुष्टं तनुं तृषितचक्षुभिरीक्षमाणाः।

त्वां ये त्रिलोकतिलक! प्रतिमव्यतीतं,
ध्यायंति तान् न सितकीर्तिलताश्नुते किं।।11।।

त्रिभुवनव्यापी श्वेत कीर्ति, माधवी लता से वेष्टित तन।
जो भवि तृषित नेत्र से निरखें, मन वच तन से कर प्रणमन।।
हे त्रिभुवन के तिलक! अनूपम, तुमको जो नित प्रति ध्याते।
उनको भी सित कीर्ति लता, नित वेष्टित करती नहिं कैसे।।11।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यव्याप्तकीर्तिलतावेष्टितत्वद्बाहुबलिभक्तिकारक-भव्यजनाभीप्सितफलप्रदायकाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ये त्वां श्रयंति दृढभक्तिभरेण तेषु,
त्रैलोक्यजंतुगणमाश्रयदानशक्तिः।
जायेत चित्रमिह किं स्वयमेव भक्ति-
स्तस्यैव सर्वमनुकूलयतीह लोके।।12।।

जो जन दृढ़भक्ती से निर्भर, तेरा आश्रय लेते हैं।
वे त्रिभुवन जन को आश्रय, देने में समरथ होते हैं।।
इसमें क्या आश्चर्य प्रभो! स्वयमेव तुम्हारी भक्ती ही।
इस जग में उस भाक्तिक के, अनुकूल सभी को करती ही।।12।।

ॐ ह्रीं सर्वजनाश्रयदानशक्तिधारकप्रभुभक्तिकरणपटुभाक्तिक-जनानुकूलफलप्रदानसमर्थाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ये त्वां नमंति हृदये दधते स्तुवंति,
त्वच्छासनैकवचनं च वहंति मूर्ध्ना।
तेषां सुरा अपि नतिं स्तवनं सुवाचं,
कुर्वंति नित्यमिह का मनुजस्य वार्ता।।13।।

जो तुमको नति करते मन में, धरते नित स्तुति करते।
तव शासन के ही वचनों को, मस्तक से धारण करते।।

सुर भी उनकी नति-स्तुति, करते आज्ञा मस्तक धरते।
फिर मनुजों की बात अहो! क्या, वे नित ही अनुचर बनते।।13।।

ॐ ह्रीं भगवद्भक्तिस्तुतिनतिकारकभक्तगणानां सर्वजनपूज्यपद-प्रापणसमर्थाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

पश्यंति कौतुकधियेव परेरिता वा,
ये त्वत्स्वरूपगुणभक्तिफलानभिज्ञाः।
मोदान्नमंति च शुभं फलमाप्नुवंति,
तच्छर्करास्वदनवन्नमनं न वंध्यं।।14।।

जो कौतुक बुद्धी या पर से, प्रेरित प्रभु का दर्श करें।
चाहे तव स्वरूप-गुण-भक्ती-फल से भी अनभिज्ञ रहें।।
यदि वे भी मुद से नति करते, फल शुभ निश्चित पाते हैं।
मिश्री चखने सम फल मिलता, प्रभु प्रणमन नहिं निष्फल है।।14।।

ॐ ह्रीं भक्तिफलानभिज्ञजनानामपि सर्वाभीप्सितफलप्रदानसमर्थाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

भक्तिर्धुनी तव विभो! कलुषं धुनीते,
नानाविकल्पहतदुष्टमनः पुनाति।
संसारघर्मभवतापमपाकरोति,
रागाद्विदूरयति मोक्षपदं ददाति।।15।।

विभो! आपकी भक्ती ही, जन-जन के कल्मष धोती है।
बहु विकल्प से पीड़ित दूषित, मन को पावन करती है।।
इस संसार ताप से जन्में, सब संताप दूर करती।
अशुभ राग से दूर हटाती, मोक्ष महापद को देती।।15।।

ॐ ह्रीं भाक्तिकजनसर्वविकल्पदूरीकरणसमर्थाय मोक्षपदप्रापणसक्षमाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

किं जल्पितैर्बहुविधैर्भुवि नास्ति किंचित्,
यन्नाम जातु नहि वश्यमुपैति भक्त्या।

दोषैर्युजोऽपि जिनदेव! तव प्रसादात्,
लोकेऽत्र देहभृत इष्टफला भवंति।।16।।

बहुत कथन से क्या हो कदाचित्, ऐसी कोई वस्तु नहीं।
इस जग में प्रभु तव भक्ती से, जो नहिं जन को मिले सही।।
हे जिनवर! दोषों से युत भी, तव प्रसाद से तनुधारी।
इस जग में इच्छित फल को, निश्चित पा लेते सुखकारी।।16।।

ॐ ह्रीं प्रभुभक्तिप्रभावात् सर्वजनवश्यकरणाय सर्वदोषविनाशकाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

देहस्य रोगमपहाय जिनस्तवेन,
मिथ्यादृशश्च कुमदं विलयंचकार।
प्रोद्भूतचन्द्र-जिनबिंब-विलोकमानः,
धौताक्षिवाष्पवदनः स समंतभद्रः।।17।।

देहरोग जब दूर हुआ फिर, तीर्थंकर स्तवन किया।
मिथ्यादृष्टी के खोटे मद को भी क्षण में नष्ट किया।।
प्रकटित हुई चन्द्रप्रभु प्रतिमा, के दर्शन कर श्री स्वामी।
हर्षाश्रू से मुख धोया था, समंतभद्र गुरू नामी।।17।।

ॐ ह्रीं जिनसंस्तवनप्रभावेण मिथ्यात्वादिकर्मविनाशनसमर्थाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

स्याद्वादभास्कर! दुरंतकुतत्त्वभाजां,
एकांतवादक्षणिकं कुमतांधकारं।
त्वत्सूक्तिरश्मिभि-ररं च विनाशयन् यः,
बंधैः कलंकसहितोऽप्यकलंकदेवः।।18।।

स्याद्वाद के भास्कर! दुस्तर, खोटे मिथ्यादृष्टी के।
एकांती जो क्षणिकवादि हैं, कुमत अंधेरा है सबके।।
तव सूक्ती किरणों से भगवन्! दूर भगाया श्रीगुरु ने।
कर्मबंध से देहसहित भी, वे "अकलंकदेव" गुरु थे।।18।।

ॐ ह्रीं कर्मकलंकदूषितचित्तांधकारविनाशकभास्कराय श्रीबाहुबलि-स्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

लोके चमत्कृतिकरं तव नाम मंत्रं,
जल्पज्जना अनुपमां श्रियमाप्नुवंति।
चित्रं तदेव यदि नाम समीहितार्थाः,
नो यांतु वश्यमिह जन्मनि जन्मभाजां।।19।।

जग में चमत्कारि हे भगवन्! तेरा नाम मंत्र अनुपम।
भविजन उसको जपते-जपते, पा लेते लक्ष्मी अनुपम।।
है आश्चर्य यही इस जग में, भव्यों के मन वांछित फल।
यदि तत्क्षण नहिं फल जावें तो, भक्ती का फल हुआ विफल।।19।।

ॐ ह्रीं परमचमत्कारिकत्वन्नाममंत्रप्रभावात् सर्ववांछितफलेच्छुकवाञ्छा-पूर्णीकरणसमर्थाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

सुज्ञानवीर्यसुखदर्शननान्त्यरूप!
कैवल्यलोचन! विराग! हितानुशास्तः!।
हे सिद्धिकांत! जिन! बाहुबलीश! देव!
श्रीगोमटेश! तवपादयुगं प्रवंदे।।20।।

हे प्रभु अनंत दर्शन-ज्ञानी, अनंत सुखमय-वीर्य स्वभाव।
वीतराग कैवल्य ज्ञानमय, लोचनयुत हित अनुशासक।।
हे श्री सिद्धिकांत हे भगवन्! बाहुबली स्वामिन्! जिनवर।
हे श्री गोमटेश तव चरणांबुज को वंदूँ नित रुचिधर।।20।।

ॐ ह्रीं वीतरागसर्वज्ञहितोपदेशिगुणसमन्विताय अनन्तचतुष्टयप्राप्ताय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

कामेशजित्! प्रतिकृतिं तव लोकयामि,
बद्धांजलिं चरिकरीमि च संस्तवीमि।
भूमौ मुहुर्मुहुरतीव निघृष्य भालं,
भक्त्या नमामि महयामि भजामि चाये।।21।।

हे कामेश विजित्! तव प्रतिकृति का अवलोकन नित्य करूँ।
हाथ जोड़ अंजली करूँ, भगवन्! नित प्रति संस्तवन करूँ।।

भू पर बार-बार अति भक्ती-युत ललाट को घिस करके।
नमस्कार कर पूजा-सेवा, अर्चा करूँ प्रभो! मुद से।।21।।

ॐ ह्रीं जिनमुखावलोकनाञ्जलिकरणादिभक्तिप्रेरितभव्यजनाशापूर्णीकरणसमर्थाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

आराधयामि तव पुण्यगुणान् स्मरामि,
त्वामेव नाथ! सततं हृदि धारयामि।
एवं त्वदीयचरणाब्जमुपासमानात्,
मुंचंति मां न कथमद्य स्वकर्मबंधाः।।22।।

आराधन मैं करूँ पुण्यगुण-गण का नित स्मरण करूँ।
नाथ! तुम्हीं को सतत हृदय में, धारण करूँ सुध्यान करूँ।।
इस विध तव चरणारविंद का, करूँ उपासन भक्ती से।
आज पुनः कटुकर्म बंध क्यों, कर मुझको नहिं छोड़ेंगे।।22।।

ॐ ह्रीं भव्यजनहृदयकमलस्थितसर्वभावनासफलीकरणदक्षाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

लोकैकनाथ! जिन! त्वां शरणं गतोऽस्मि,
मोपेक्षणं मम कुरुष्व दयां विधत्स्व।
मां पाहि भक्तजनवत्सल! संपुनीहि,
दुःखांकुरं दलय सिद्धपदं नयस्व।।23।।

हे त्रिलोक के एक नाथ! जिन! शरण तुम्हारी आया हूँ।
दया करो मत करो उपेक्षा, मम अति श्रद्धा लाया हूँ।।
रक्षा करो भक्तजन वत्सल! मुझको नाथ! पवित्र करो।
दुखांकुर को दलन करो, प्रभु सिद्धीपद का दान करो।।23।।

ॐ ह्रीं शरणागतशरण्याय सर्वदुःखदलनसमर्थाय सिद्धपदप्रापकाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

मूर्तिः प्रभो! निरुपमा सुयशोलताभि-
र्युक्ता सुबाहुबलिनो जिनपस्य तेऽत्र।।

तिष्ठेच्चिरं जयतु जैनमतश्च नित्यं,
चामुंडराजसितकीर्तिलतापि तन्यात्।।24।।

प्रभो! आपकी मूर्ती अनुपम, सुयशलताओं से वेष्टित।
हे बाहूबलि! हे जिनपति! तव, मूर्ती तुंग सतावन फुट।।
तिष्ठे भू पर चिर कालावधि, जैनधर्म जयशील रहे।
चामुंडराय कि उज्ज्वल कीर्ती-बेली भी विस्तार लहे।।24।।

ॐ ह्रीं कीर्तिलतावेष्टितबाहुबलिमूर्तिचिरस्थायिभवनप्रार्थनापूरिताय शाश्वतजैनधर्मसंरक्षणसमर्थाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।

–पूर्णार्घ्य –

इत्थं समाहितमनाः स्तवनं त्रिसंध्यं,
कुर्यात् प्रभो! तव सुधीर्विधुतान्यकृत्यः।
आर्हन्त्यसौख्यसुफलेन सहाचिरात् सः,
ज्ञानेन शोभितमतिः समुपैति सिद्धिं।।25।।

इस विध सावधान चित होकर, अन्यकृत्य से विरहित मन।
प्रभो! आपकी स्तुति को जो, करते त्रयकालिक बुधजन।।
जिन आर्हंत्य सौख्य सत्फल सह, ज्ञान सुशोभित मति जिनकी।
''ज्ञानमती'' वे निश्चित पाते, ध्रुव आत्यंतिक सिद्ध गती।।25।।

–दोहा –

श्रीबाहूबलि देव तुम, कामदेव पद ईश।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय के, नमूँ नमूँ नत शीश।।1।।

ॐ ह्रीं तत्पूजाफलार्हन्त्यलक्ष्मीसमन्वितकैवल्यज्ञानपदप्रापणसमर्थाय परमसिद्धपरमेष्ठिने श्रीबाहुबलिस्वामिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।।

(चतुर्थ वलय के 108 अर्घ्य)

श्री वत्सादिमहालक्ष्मी-लक्षितोत्तुंगविग्रहम्।
नाम्नामष्टशतेनाहं, स्तोष्ये श्रीगोम्मटेशिनम्।।

–सोरठा –

श्री बाहूबलि ईश, सकल अमंगल को हरें।
जजूँ नमाकर शीश, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।1।।

अथ मंडलस्योपरि चतुर्थवलये अष्टोत्तरशतकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ॐ ह्रीं श्रीमते श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।
ॐ ह्रीं बाहुबलिने श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।
ॐ ह्रीं नाभिनप्त्रे श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।
ॐ ह्रीं नाभेयनंदनाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।
ॐ ह्रीं सौनंदेयाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।
ॐ ह्रीं सुरम्येशाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।
ॐ ह्रीं पौदनापत्तनेशाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।
ॐ ह्रीं सर्वातिशयसाम्राज्यायश्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।
ॐ ह्रीं राजचूडामणये श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।
ॐ ह्रीं विभवे श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।
ॐ ह्रीं समवृत्तशिरसे श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।
ॐ ह्रीं चारुललाटाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।
ॐ ह्रीं दीर्घलोचनाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।
ॐ ह्रीं अंसावलंबिश्रवणाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।
ॐ ह्रीं भास्वद्भ्रूयुग सद्धनुषे श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15
ॐ ह्रीं ईषत्पीनहनवे श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।
ॐ ह्रीं चारुगण्डाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।
ॐ ह्रीं चंपकनासिकाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।
ॐ ह्रीं राकानिशाकराय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।
ॐ ह्रीं कुटिलायत कुंतलाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।
ॐ ह्रीं कंबुग्रीवाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।
ॐ ह्रीं गूढजत्रवे श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।
ॐ ह्रीं सिंहस्कंध विभासुरायश्रीबाहुबलिस्वामिनेअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं आजानुवाहवे श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।
ॐ ह्रीं उत्तुंगपीनवक्षसे श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।
ॐ ह्रीं महाकराय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।
ॐ ह्रीं कंठीरवकटये श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।
ॐ ह्रीं निम्ननाभये श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।
ॐ ह्रीं पृथुनितंबकाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।
ॐ ह्रीं वज्रसारसमानोरवे श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।
ॐ ह्रीं दृढजंघाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।
ॐ ह्रीं समक्रमाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।
ॐ ह्रीं महातेजसे श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।
ॐ ह्रीं महोदग्रविग्रहाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।
ॐ ह्रीं प्रियदर्शनाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।
ॐ ह्रीं समाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।
ॐ ह्रीं समानावयवाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।
ॐ ह्रीं धर्मज्ञाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।
ॐ ह्रीं शुभलक्षणाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।
ॐ ह्रीं कामदेवाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।
ॐ ह्रीं महावीर्याय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।
ॐ ह्रीं सार्वभौमप्रतापजिते श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।
ॐ ह्रीं भूपाध्यक्षाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।
ॐ ह्रीं महाभागाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।
ॐ ह्रीं युद्धत्रय विशारदाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।
ॐ ह्रीं आजवंजवसारज्ञाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।
ॐ ह्रीं वीतरागाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।
ॐ ह्रीं महातपसे श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।
ॐ ह्रीं शक्रमूर्धोदयलसत्कायोत्सर्गाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।49।।

ॐ ह्रीं महाधृतये श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।
ॐ ह्रीं तपःक्षुभितनाकेशाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।
ॐ ह्रीं लब्धर्द्धये श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।
ॐ ह्रीं अघभंजनाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।
ॐ ह्रीं सुरेशप्राप्तपूजर्द्धये श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।
ॐ ह्रीं कल्याण गुणमंडितायश्रीबाहुबलिस्वामिनेअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।55।।
ॐ ह्रीं माधवीवल्लरिभ्राजद्दिव्यमंगलविग्रहाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।56।।
ॐ ह्रीं केवलार्कोदयाचिंत्यमहिम्ने श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।57।।
ॐ ह्रीं अतीन्द्रियार्थदृशे श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।58।।
ॐ ह्रीं निरंबराय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।59।।
ॐ ह्रीं निराहाराय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।60।।
ॐ ह्रीं निराभरण सुन्दराय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।61।।
ॐ ह्रीं अनिर्देश्यांगसुषमाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।62।।
ॐ ह्रीं भ्राजिष्णवे श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।63।।
ॐ ह्रीं भुवनोत्तमाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।64।।
ॐ ह्रीं नियतात्मने श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।65।।
ॐ ह्रीं प्रसन्नात्मने श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।66।।
ॐ ह्रीं सर्वज्ञाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।67।।
ॐ ह्रीं सर्वदर्शनाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।68।।
ॐ ह्रीं भव्यलोकपरित्रात्रे श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।69।।
ॐ ह्रीं मोहाडंबरखंडनाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।70।।
ॐ ह्रीं महायोगिने श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।71।।
ॐ ह्रीं महारूपाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।72।।
ॐ ह्रीं पापपांशुविधूननाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।73।।
ॐ ह्रीं चिदानन्दमयाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।74।।

ॐ ह्रीं सार्वाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।75।।
ॐ ह्रीं शरणागतरक्षकाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।76।।
ॐ ह्रीं परंज्योतिषे श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।77।।
ॐ ह्रीं परंधाम्ने श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।78।।
ॐ ह्रीं परमेष्ठिने श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।79।।
ॐ ह्रीं परात्पराय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।80।।
ॐ ह्रीं परमात्मने श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।81।।
ॐ ह्रीं परब्रह्मणे श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।82।।
ॐ ह्रीं धर्मपीयूषवर्षणाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।83।।
ॐ ह्रीं स्वयंभुवे श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।84।।
ॐ ह्रीं शाश्वताय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।85।।
ॐ ह्रीं शांताय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।86।।
ॐ ह्रीं सूरिस्वप्नफलप्रदाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।87।।
ॐ ह्रीं निरंजनाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।88।।
ॐ ह्रीं निर्विकाराय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।89।।
ॐ ह्रीं प्रेक्षकप्रीतिवर्धनाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।90।।
ॐ ह्रीं ज्योतिर्मूर्तये श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।91।।
ॐ ह्रीं गभीरात्मने श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।92।।
ॐ ह्रीं कल्याणाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।93।।
ॐ ह्रीं अणीयसे श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।94।।
ॐ ह्रीं अच्युताय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।95।।
ॐ ह्रीं शुभगुणोज्ज्वलाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।96।।
ॐ ह्रीं नेत्रे श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।97।।
ॐ ह्रीं महीयसे श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।98।।
ॐ ह्रीं बोधसर्वगाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।99।।
ॐ ह्रीं मोक्षलक्ष्मीपतये श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।100।।
ॐ ह्रीं देवदेवाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।101।।

ॐ ह्रीं सर्वमुनीडिताय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।102।।
ॐ ह्रीं नीरजसे श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।103।।
ॐ ह्रीं निर्मलाय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।104।।
ॐ ह्रीं सौम्याय श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।105।।
ॐ ह्रीं स्वभावमहिमोदयायश्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।106।।
ॐ ह्रीं जैनमहिमासाक्षिणे श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।107।।
ॐ ह्रीं विंध्यशैलशिखामणये श्रीबाहुबलिस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।108।।

–पूर्णार्घ्य –

इमां नामावलिं पुण्यां, जिष्णोः श्रीगोम्मटेशिनः।
श्रद्धया पठते यस्तु, सः स्यात्कैवल्यबोधभाक्।।1।।

आयुरारोग्यसौभाग्य-मोजस्तेजोमहद्यशः।
अनेनार्चति यः शुद्धः, श्रियं प्राप्नोत्यमनश्वरीम्।।2।।

तर्ज-(जय गोमटेश.....)

जय बाहुबली जय बाहुबली, मम हृदय विराजो-2।।
हम यही भावना करते हैं, ऐसा जीवन का प्रतिक्षण हो।
हो रसना पर तुम नाम मंत्र, अनुभव में ज्ञानामृत कण हो।।हम.।।

प्रभु एक वर्ष तक ध्यान लीन, कैवल्यज्ञान को प्राप्त किया।
शुभ गंधकुटी में स्थित हो, अगणित भव्यों को बोध दिया।।
फिर सिद्धालय में जा पहुँचे, भक्तों को भी शिवदायक हो।।हम.।।

जो भक्त आप पूजा करते, वे सर्व दुखों का क्षय करते।
फिर स्वयं सर्व सुख पा करके, अगणित गुण रत्नाकर बनते।।
कैवल्य ज्ञानमति मिले शीघ्र, बस यही कामना पूरण हो।।हम.।।

ॐ ह्रीं अंतरंगानन्तचतुष्टय-बहिरंगप्रातिहार्यादिविभूतिसमन्वित-श्रीमदादि अष्टोत्तरशतनाममंत्रविभूषिताय सिद्धपरमेष्ठिने श्रीबाहुबलिस्वामिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य– **1. ॐ ह्रीं सर्वाभीप्सितफलप्रदायिने श्रीबाहुबलिस्वामिने नमः।**
2. ॐ ह्रीं अनन्तबलप्राप्तये श्रीबाहुबलिस्वामिने नमः।
3. ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलिस्वामिने नमः। (तीनों में से किसी एक मंत्र की जाप्य करें।)

जयमाला

–शंभु छंद –

जय जय श्रीबाहुबली भगवन्, जय जय त्रिभुवन के शिखामणी।
जय जय महिमाशाली अनुपम, जय जय त्रिभुवन केविभामणी।।
जय जय अनंत गुणमणिभूषण, जय भव्य कमल बोधन भास्कर।
जय जय अनंत दृग ज्ञानरूप, जय जय अनंत सुख रत्नाकर।।1।।

तुम नेत्र युद्ध जल मल्ल युद्ध, में चक्रवर्ति को जीत लिया।
चक्री ने छोड़ा चक्ररत्न, उसने भी तुम पद शरण लिया।।
फिर हो विरक्त भरताधिप की, अनुमति ले जिनदीक्षा लेकर।
प्रभु एक वर्ष का योग लिया, ध्यानस्थ खड़े निश्चल होकर।।2।।

निःशल्य ध्यान का ही प्रभाव, सर्वावधिज्ञान प्रकाश मिला।
मनपर्यय विपुलमती ऋद्धी से, अतिशय ज्ञान प्रभात खिला।।
तप बल से अणिमा महिमादिक, विक्रिया ऋद्धियाँ प्रकट हुईं।
आमौषधि सर्वौषधि आदिक, औषधि ऋद्धी भी प्रकट हुईं।।3।।

क्षीरस्रावी घृत मधुर अमृत, स्रावी रस ऋद्धी प्रगटी थीं।
अक्षीण महानस आलय क्या, संपूर्ण ऋद्धियाँ प्रकटी थीं।।
वे उग्र-उग्र तप करते थे, फिर भी दीप्ती से दीप्यमान।
वे तप्त घोर औ महाघोर तप, तपते फिर भी शक्तिमान।।4।।

इन ऋद्धी से नहिं लाभ उन्हें, फिर भी इंद्रादिक नमते थे।
खग आकर प्रभु की ऋद्धी से, निज रोग निवारण करते थे।।
सर्पों ने वामी बना लिया, प्रभु के तन पर चढ़ते रहते।
बिच्छू आदिक बहु जंतु वहाँ, प्रभु के तन पर क्रीड़ा करते।।5।।

बासंती बेल चढ़ी तन पर, पुष्पों की वर्षा करती थीं।
मरकत मणिसम सुंदर तन पर, बेलें अति मनहर दिखती थीं।।
सब जात विरोधी जीव वहाँ, आपस में प्रेम किया करते।
हाथी नलिनीदल में जल ला, प्रभु पद में चढ़ा दिया करते।।6।।

प्रभु एक वर्ष उपवास पूर्ण कर, शुक्लध्यान के सम्मुख थे।
उस ही क्षण भरताधिप ने आ, पूजा की अतिशय भक्ती से।।
होता विकल्प यह कभी-कभी, मुझसे चक्री को क्लेश हुआ।
इस हेतु अपेक्षा उनकी थी, आते ही केवलज्ञान हुआ।।7।।

तत्क्षण सुरगण ने गंधकुटी, रच करके अतिशय पूजा की।
भरतेश्वर भक्ती में विभोर, बहुविध रत्नों से पूजा की।।
प्रभु ने दिव्यध्वनि से जग को, उपदेशा पुण्य विहार किया।
फिर शेष कर्म का नाश किया, औ मुक्ती का साम्राज्य लिया।।8।।

–दोहा–

धन्य धन्य बाहूबली, योगचक्रेश्वर मान्य।
पूर्ण 'ज्ञानमति' हेतु मैं, नमूँ नमूँ जग मान्य।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीबाहुबलीस्वामिने जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छंद–

श्रीबाहुबली विधान ये, जो भव्य श्रद्धा से करें।
वे रोग शोक दरिद्र दुखहर, सर्वसुख संपति भरें।।
मनबल वचनबल प्राप्त कर, तनु में अतुलशक्ती धरें।
निज 'ज्ञानमति' कैवल्यकर, फिर सिद्धिकन्या वश करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

बड़ी जयमाला

–दोहा–

श्रीबाहूबलि! आपको, नमूँ-नमूँ शत बार।
तव प्रतिमा चिन्तामणी, चिंतित फल दातार।।1।।

भरतराज ने पोदनपुर में, बाहुबली की मूर्ति महा।
भक्ति भाव से की स्थापित, पंचशतक धनु तुंग महा।।
सुर-नर-मुनिजन प्रतिदिन पूजें, भक्तिभाव से दर्श करें।
महामहिम जिनबिंब दर्श से, जन्म-जन्म के पाप हरें।।2।।

कर्नाटक में श्रवणबेलगुल, अतिशय क्षेत्र प्रसिद्ध महा।
भद्रबाहु श्रुतकेवलि गुरु की, हुई समाधी श्रेष्ठ जहाँ।।
चन्द्रगुप्त सम्राट् दिगंबर, मुनिवर की गुरु भक्ती का।
दृश्य दिखा स्मरण कराता, गुरुभक्ती भवाब्धि नौका।।3।।

नेमिचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती गुरुवर के शिष्य प्रधान।
चामुंडराय प्रथित गुणभूषित, श्रावककुल अवतंस महान।।
विंध्यगिरी पर्वत के ऊपर, सत्तावन फुट तुंग महा।
अति मनोज्ञ मूर्ति स्थापित की, वीतराग की छवी महा।।4।।

धैर्य वीर्य गांभीर्य सौम्य शुभ, गुण मूर्ती में प्रगट अहो।
सचमुच में ही दर्श दे रहे, बाहुबली साक्षात् अहो।।
लंबित हैं घुटनों तक बाहू, नासा दृष्टि विकाररहित।
स्मित मुख प्रकटित करता, अन्तःकालुष्य विषादरहित।।5।।

सर्पों के मुख की विष अग्नी, चरणों का आश्रय पाकर।
शांत हो गई जय जय भुजबलि, शांति सुधामय रत्नाकर।।
जय जय सकल मध्य युद्धत्रय, में भरतेश्वर को जीता।
राज्यभोग सुख त्याग मुक्ति के, लिए आदरी जिनदीक्षा।।6।।

भरतराज ने सकल दिग्विजय, कर जो जयकीर्ती पाई।
वो ही चक्र रूप मूर्तिक बन, जगमग ज्योति ज्वलित आई।।
सब जन बीच बाहुबलि प्रभु की, प्रदक्षिणा त्रय दीनी थी।
फिर भी प्रभु से त्यक्त तिरस्कृत लज्जित सम ही उस क्षण थी।।7।।

वही कीर्ति श्री योगरूढ को, लता छद्म से वेढ लिया।
अद्यावधि माहात्म्य प्रकट कर, रही जगत सब व्याप्त किया।।
स्वानुभूति रस रसिक जनों के, मन समुद्र की वृद्धि करें।
ध्यानामृत का बोध करा कर, सब संकल्प-विकल्प हरें।।8।।

करना नहीं रहा कुछ भी, कृतकृत्य प्रभो! भुज लंबित हैं।
नहीं भ्रमण करना जग में अब, अतः चरण युग अचलित हैं।।
देख चुके सब जग की लीला, अंतरंग अब देख रहे।
सुन-सुन करके शांति न पाई, अतः विजन में खड़े हुये।।9।।

वर्षा ऋतु में मेघदेव, भक्ती से जल अभिषेक करें।
शीत काल में हिम कण सुन्दर, शर्करसम अभिषेक करें।।
मेघ पंक्तियाँ घिर-घिर आतीं, इक्षू रस इव दिखती हैं।
पुनः सूर्य की किरण सुनहरी, घृत अभिसिंचन करती हैं।।10।।

पूर्ण चंद्र रात्री में आकर, भक्ति भाव से मुदित हुआ।
दुग्धाब्धी अमृतसम किरणों, से प्रभु का बहु न्हवन किया।।
शशि ज्योत्स्ना शुक्ल ध्यान सम, शुभ्र दही ले आती हैं।
भक्ति भाव से स्नपन करती, रहती तृप्ति न पाती हैं।।11।।

भास्कर देव सहस्र करों से, केशर चंदन को लेकर।
हर्षित प्रेम भक्ति से गद्गद, हो अभिषेक करें दिनभर।।
प्रकृती देवी निज सुषमा से, नित प्रति पूजन करती हैं।
मधुर हास्यमय सुमन वृष्टि कर, जन-जन का मन हरती हैं।।12।।

मुनिजन श्रावकगण आ-आकर, दर्शन-वंदन करते हैं।
भक्ती से हर्षित मन गद्गद, हो बहु स्तवन उचरते हैं।।
सौम्य मूर्ति को देख-देखकर, रोमांचित हो जाते हैं।
जन्म-जन्म कृत पाप दूर कर, प्रेमाश्रू को बहाते हैं।।13।।

देश-विदेशों से जन आते, कौतुक से दर्शन करते।
शिल्पकला सौंदर्य देखते, मन में बहु हर्षित होते।।
उनके मन का हर्ष भाव भी, पापपुंज का नाश करे।
भक्ति बिना अज्ञातरूप ही, पुण्य कर्म का बंध करे।।14।।

प्राकृत रूप अनूप निरंबर, निराभरण तनु शोभ रहा।
जग की कला सृष्टि में अनुपम, कला रूप सौंदर्य अहा।!
दर्शकगण अपूर्व शांतीरस, का अनुभव कर सुख पाते।
यही रूप इक परम शांतिप्रद, नहीं और यह कह जाते।।15।।

नास्तिकवादी भी दर्शन कर, बहु विस्मित हो जाते हैं।
जिनमत द्विष मिथ्यादृष्टी के, भी मस्तक झुक जाते हैं।।
धर्मद्रोहि मूर्तिध्वंसक भी, चरणों में नत हुए अहो।
चमत्कार से जन-जन के मन, आश्चर्यान्वित हुए अहो।।16।।

दक्षिणवासी जैनेतर भी, प्रभु को इष्ट देव कहते।
मनोकामना पूरी होती, दुःख दारिद्र कष्ट हरते।।
चिंतामणि पारस कल्पद्रुम, मन चिंतित फलदायक हैं।
वीतराग छवि दर्श अहो!, अनुपम अचिंत्य फलदायक हैं।।17।।

युग-युग से यह मूर्ति जगत को, शुभ संदेश सुनाती है।
यदि सुख शांति विभव चाहो, सब त्याग करो सिखलाती है।।
यदि नश्वर धन इन्द्रिय सुख तज, तनु निर्मम बन जावोगे।
अविनश्वर अनंत सुख पा, त्रैलोक्य धनी बन जावोगे।।18।।

जय जय संवत्सर निश्चल तनु! जय जय महा तपस्वी हो।
जातरूपधर! विश्व हितंकर! जय जय महा मनस्वी हो।।
नाभिराज के पौत्र मदनतनु, पुरुदेवात्मज नमो नमो।
मात सुनंदासुत भरताधिप-नुत पादाम्बुज नमो नमो।।19।।

इन्द्र-नरेन्द्र-मुनीन्द्र भक्ति से, घिस-घिस शीश प्रणाम करें।
लिखी भाल में कुकर्म रेखा, मानों घिस-घिस नाश करें।।
चित्सुखशांति सुधारस दाता, भविजन त्राता नमो नमो।
शिवपथनेता शर्म विधाता, मन-वच-तन से नमो नमो।।20।।

जो जन भक्तिभाव से प्रभु का, गुण संकीर्तन करते हैं।
नर-सुर के अभ्युदय भोगकर, निःश्रेयस को पाते हैं।।
मुनिजन हृदय सरोरुहबंधु! भवि कुमुदेंदु! नमो नमो।
भुक्तिमुक्ति फलप्रद! गुण सिंधु! हे जग बंधु! नमो नमो।।21।।

हे दुःखित जनवत्सल! शरणागत-प्रतिपालक! बाहुबली।
त्राहि त्राहि हे करुणासिंधो! पाहि जगत से महाबली।।
जय जय मंगलमय लोकोत्तम, जय जय शरणभूत जग में।
जय जय सकल अमंगल दुःखहर! जय जयवंतो प्रभु जग में।।22।।

जय जय हे जग पूज्य! जिनेश्वर, जय जय श्री गोम्मटेश्वर की।
जय जय जन्म मृत्युहर! सुखकर! जय जय योग चक्रेश्वर की।।
जय जय हे त्रैलोक्य हितंकर, सब जग में मंगल कीजे।
जय जय रत्नत्रय पूर्ती कर, 'केवलज्ञानमती' दीजे।।23।।

—दोहा—

श्रवणबेलगुल तीर्थ पर, सत्तावन फुट तुंग।
श्री बाहूबलि मूर्ति को, जजत लहें भवि पुण्य।।24।।

ॐ ह्रीं अनन्तबलप्राप्तये श्रीबाहुबलिस्वामिने जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।।

—गीता छंद—

श्रीबाहुबली विधान ये, जो भव्य श्रद्धा से करें।
वे रोग शोक दरिद्र दुखहर, सर्वसुख संपति भरें।।
मनबल वचनबल प्राप्त कर, तनु में अतुलशक्ती धरें।
निज 'ज्ञानमति' कैवल्यकर, फिर सिद्धिकन्या वश करें।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

इति बाहुबली विधानं समाप्तम्।

श्री बाहुबली विधान प्रशस्ति

श्री शांति कुंथु अरनाथ प्रभू ने, जन्म लिया इस धरती पर।
यह हस्तिनागपुर तीर्थ वंद्य, रत्नों की वृष्टि हुई यहाँ पर।।
यहाँ जम्बूद्वीप बना सुंदर, जिनमंदिर हैं महिमा मंडित।
मेरा यहाँ संघ सहित निवास, स्वाध्याय ध्यान से है हितप्रद।।1।।

श्री बाहुबली का यह विधान, मंत्रों का उच्चारण सुखप्रद।
यह तन का सर्वरोग हरकर, अतिशय शक्ती देता संतत।।
वीराब्द पचीस सौ बत्तिस में, शुभ माघ शुक्ल तेरस तिथि में।
यह विधान रचना पूर्ण किया, होवे मंगलकर सब जग में।।2।।

श्रीमत् चारित्र चक्रवर्ती, आचार्य शांतिसागर गुरुवर।
बीसवीं सदी के प्रथम सूरि, इन पट्टाचार्य वीरसागर।।
ये दीक्षा गुरुवर मेरे हैं, मुझ नाम रखा था 'ज्ञानमती'।
इनके प्रसाद से ग्रंथों की, रचना कर हुई अन्वर्थमती।।3।।

श्री श्रवणबेलगुल तीरथ पर, बाहूबलि की प्रतिमा सुंदर।
चामुंडराय निर्मित प्रतिमा, इक हजार वर्ष से है स्थिर।।
श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती गुरुवर के सन्निध में।
हुई प्राण प्रतिष्ठा इन प्रभु की, यह अतिशयकारी हैं जग में।।4।।

श्री बाहुबली प्रभु की पूजा, भाक्तिकगण नितप्रति किया करें।
जिनशासन देव-देवियाँ भी, भक्तों की रक्षा किया करें।।
जब तक हस्तिनापुर में सुमेरु-पर्वत, जब तक शशि-सूर्य रहें।
तब तक मुझ गणिनी 'ज्ञानमती' कृत, यह विधान जयशील रहे।।5।।

।। इति प्रशस्तिः समाप्ता।।

भगवान बाहुबली काव्य चरित

ईसवी सन् 1965 में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने श्रवणबेलगोल तीर्थ चातुर्मास के मध्य भगवान बाहुबली की भक्ति में अनेक संस्कृत-हिन्दी स्तुतियों की रचना की, जिनमें भगवान बाहुबली काव्यचरित, जो कि 111 पद्यों में हैं, उनमें से भगवान बाहुबली के ध्यान का वर्णन करने वाले कुछ पद्य यहाँ प्रस्तुत हैं –

बाहुबली कैलाशगिरी पर, जाकर जिनदीक्षा लेकर।
एक वर्ष का महायोग ले, खड़े हुए निश्चल होकर।।
भोग चक्रेश्वर भोग भोगते, छ्यानवे सहस रानियों में।
फिर भी योगी योगाभ्यासी, जैसे कमल रहे जल में।।57।।

काम[1] चक्रेश्वर कामभोग तज, कामदेव मद हरते हैं।
हायन[2] प्रतिमायोग रूढ़ हो, योग[3] चक्रेश्वर बनते हैं।।
रहसि[4] खड़े निश्चल कल्पद्रुम, हरित[5] वर्ण तनु शोभ रहा।
लता छद्म[6] से मुक्ती कन्या, सवर्ण[7] प्रभु को देख अहा।।58।।

वर्ण रूप कुल गुण सदृश लख, पुष्प माल ले वरती है।
शुभ एकांत प्रदेश देखकर, प्रेमालिंगन करती है।।
परमानंद सुखामृत अनुभव, से कुछ-कुछ दृग मुकुलित[8] है।
अविच्छिन्न सुख से ही मानों, कायोत्सर्ग तनु अचलित है।।59।।

भक्ति भाव से दर्शन-वंदन, करके भाक्तिक गण आकर।
मानों पूजें चरण कमल युग, नील कमल को ला-लाकर।।
ऐसा भान कराते अजगर, सर्प फिर ऊँचे फण कर।
चरणों में वल्मीक[9] बनावे, फुंकारें निर्भय होकर।।60।।

बड़े प्रेम से हरिणी भी, सिंहों के बच्चे पाल रही।
व्याघ्र शिशू को दूध पिलाकर, गाय अहो फिर चाट रही।।

1. कामदेवपद के धारी। 2. एक वर्ष। 3. ध्यान के स्वामी। 4. एकांत में। 5. बाहुबली का शरीर वर्ण हरा था। 6. बहान से। 7. अपने ही रंग और जाति का। 8. बंद। 9. वामी।

जातविरोधी जीव सभी, आपस में मैत्री भाव धरें।
हाथी-सिंह-शृगाल-सर्प-खरगोश सभी मिलकर विचरें।।61।।

सौम्य मूर्ति को शांति छवी को, देख-देख अनुकरण करें।
शांत भाव से जन्मजात भी, क्रूर वैर दुर्भाव हरें।।
वन के वृक्ष-पुष्प-फल युत हो, अतिशय झुकते जाते हैं।
मानों भक्ति में विभोर हो, झुक-झुक शीश नमाते हैं।।62।।

लता वल्लरी[1] निज पुष्पों से, पुष्पवृष्टि करती रहतीं।
मधुकर[2] के मधुर स्वर से, गुणगान सदा करती रहतीं।।
सुखद पवन बह रही सुगंधित, लता डालियाँ हिलती हैं।
मानों वनलक्ष्मी भुजप्रसरित, लय से नर्तन करती हैं।।63।।

षट् ऋतु के सब फल-पुष्पादिक, फलित फूलते हैं वन में।
योगीश्वर दर्शन से मानो, हर्षित होते हैं मन में।।
वन क्रीड़ा के लिए वहाँ पर, विद्याधरियाँ आती हैं।
योगीश्वर को नमस्कार कर-कर विस्मित हो जाती हैं।।64।।

योगलीन तनु पर बिच्छू, सर्पादिक क्रीड़ा करते हैं।
लता भुजाओं तक चढ़ती हैं, बहु वनजन्तु विचरते हैं।।
लतामंजरी हटा-हटाकर, सर्प को दूर भगाती हैं।
फिर भी मानों अधिक प्रेम से, ही आ-आ लग जाती हैं।।65।।

अहो! ध्यान है धन्य-धन्य, धन धन्य योगमय मुद्रा है।
सदा खड़े हैं धर्मध्यान में, नहीं कदाचित् तन्द्रा है।।
विद्याधर ज्योतिर्व्यंतर सुर, के विमान रुक जाते हैं।
उतर-उतर कर सब दर्शन-पूजन करके सुख पाते हैं।।66।।

हाथी-हथिनी कमलपत्र में, प्रीती से जल लाते हैं।
भक्तिभाव से बाहुबलि के, श्रीचरणों में चढ़ाते हैं।।
अहो प्रभू की अद्भुत महिमा, देख-देख सब चकित हुए।
मानो मोहनी सुन्दर छवि को, देख-देख सब मुदित हुए।।67।।

1. वेल। 2. भ्रमर।

प्रिया हजारों छोड़ीं फिर भी, मुक्तिरमा से प्रीति करें।
राज्य भोग सम्पत्ति में निस्पृह, कर्मशत्रु से युद्ध करें।।
मनसिज[1] हो मन को वश में कर, मनोज[2] मद का नाश किया।।
इन्द्रिय सुख में निस्पृह हो भी, निरुपम सुख की आश किया।।68।।

चतुराहार त्याग है तो भी, स्वात्म सुधारस पीते हैं।
क्रोध मान से रहित अहो! फिर भी कषाय अरि जीते हैं।।
षट्कायों की दया पालते, मोहराज प्रति निर्दयता।
चरित्र व्रत गुण में ममत्व है, निज शरीर में निर्ममता।।69।।

सब जीवों में प्रेम भाव है, नहीं किसी से मत्सर द्वेष।
पंचम गति को मन उत्सुक है, चतुर्गती दुख से विद्वेष।।
रत्नत्रय निधि के स्वामी हैं, फिर भी आकिंचन्य अहो!।
पंच परावर्तन से डर कर, पाया निर्भय पंथ अहो।!।।70।।

सब जग से वैरागी होकर, आत्म गुणों में रागी हैं।
योगी निजानन्द सुख भोगी, शुद्धातम अनुरागी हैं।।
ज्ञानी ध्यानी मौनी त्यागी, अकंप निश्चल सुमेरू सम।
महामना हे महाप्रभावी, दृढ़प्रतिज्ञ हैं महानतम।।71।।

बाहुबली भुजबली दोर्बली, मनोबली हे कायबली।
निर्बल भी प्रभु से बल पाते, आत्मबली भी महाबली।।
शीत तुषार ग्रीष्म वर्षादिक, सभी परीषह सहते हैं।
महा परीषह विजयी स्वामी, महोग्रोग्रतप[3] करते हैं।।72।।

महा तपःप्रभाव से बुद्धी, विक्रिया सर्वौषधि ऋद्धी।
आदि सभी ऋद्धियाँ प्रगट हो, करतीं जन-जन की सिद्धी।।
दिव्य मनःपर्यय ज्ञानर्द्धि, घोर पराक्रम दीप्त महा।
अणिमा महिमादिक आमर्श, जल्लौषधि औ क्षीरस्रवा।।73।।

अमृतस्रावी मधुरस्रावी, महानसालय[4] अक्षीण हैं।
काय-वचन-मन बल ऋध्यादिक, मुक्तिवधू दूतीसम हैं।।

1-2. कामदेव। 3. अति उग्र-उग्र। 4. अक्षीणमहानस और अक्षीणमहालय।

परन्तु योगी योगलीन हैं, नहीं प्रयोजन इनसे है।
जन-जन आकर विष रोगादिक, कष्टनिवारण करते हैं।।74।।

महा तपोबल से देवों के, आसन कंपित हो जाते।
बार-बार सब शीश झुकाते, नमस्कार हैं कर जाते।।
सब संकल्प-विकल्प रहित प्रभु, आत्म ध्यान में निश्चल हैं।
एक वर्ष उपवास पूर्ण कर, शुक्लध्यान के सन्मुख हैं।।75।

उस ही दिन भरतेश्वर आकर, विधिवत् पूजा करते हैं।
बाहुबली तत्काल परम, केवलज्ञानेश्वर बनते हैं।।
बाहुबली का हृदय कदाचित्, स्वल्प विकल्पित हो जाता।
भरत को मुझसे क्लेश हो गया, *भ्रातृप्रेम यह जग जाता।।76।।

अतः भरत के पूजन करते, केवलज्ञान प्रकाश हुआ।
निज अपराध निवारण कारण, भरत प्रथमतः नमन किया।।
केवलज्ञान सूर्य के उगते, देवों के आसन कांपे।
मुकुटकोटि झुक गये स्वयं, कल्पद्रुम से सुपुष्प बरसे।।77।।

स्वर्गों से इन्द्रादिक आकर, जय-जय-जय ध्वनि करते हैं।
गंधकुटी की रचना करके, प्रभु की पूजा करते हैं।।
छत्र फिरे ढुरे रहें चंवर, सिंहासन दुंदुभि ध्वनि होती।
मंद सुगंधित पवन चल रही, पुष्पों की वृष्टी होती।।78।।

भरतेश्वर बहु हर्षित होकर, अनुपम पूजा करते हैं।
नहीं समर्थ है सरस्वती, जन क्या वर्णन कर सकते हैं।।

---

* बाहुबलि को यह शल्य थी कि भरत की भूमि में खड़ा हूँ, अतः केवलज्ञान नहीं होता था यह प्रसिद्धि जिनसेन स्वामी के महापुराण से असंगत है। स्वामी जिनसेन बाहुबलि स्वामी के सभी ऋद्धियाँ व मनःपर्यय ज्ञान का वर्णन करते हैं और कहते हैं कि बाहुबलि के मन में कभी-कभी यह भाव हो जाता कि भरत को मुझसे क्लेश हो गया, यह भ्रातृप्रेम की भावना जाग्रत हो जाती थी तथा उन्होंने दीक्षा लेकर एक वर्ष का योग नियम लिया था, इस प्रेम के कभी-कभी हो जाने से भरत के आते ही पूजन करते ही केवलज्ञान हो गया।

भ्रातृप्रेम धर्मानुराग, जन्मान्तर का संस्कार महान।
केवलपद की भक्ति चार के, मिलने से वैशिष्ट्य महान।।79।।

अहो एक के ही निमित्त से, भात्तिक जन का मन खिलता।
फिर जब चारों ही मिल जावें, हर्ष पार क्या हो सकता।।
गंगा जल की है जलधारा, गंध सुगंधित चंदन है।
मोती के अक्षत कल्पद्रुम, पारिजात के शुभ सुम[1] हैं।।80।।

अमृतमय नैवेद्य रत्न के, दीप मलयगिरि धूप महा।
कल्पवृक्ष के फल रत्नों के, अर्घ्य चढ़ावें श्रेष्ठ अहा।।
षट्खंडाधिप भरत चक्रेश्वर, स्वयं पुजारी भक्त जहाँ।
योग चक्रेश्वर पूज्य केवली, पूजन का क्या ठाट वहाँ।।81।।

सुरकिन्नर गंधर्व खगेश्वर[2], नरपति पूजन करते हैं।
जय-जय महाबली बाहूबलि, जय-जयकार उचरते हैं।।
केवलज्ञान ज्योति से प्रभु ने, जगत चराचर देख लिया।
सबके स्वामी अंतर्यामी, सबको हित उपदेश दिया।।82।।

1. पुष्प। 2. विद्याधरपति।

भगवान बाहुबली चालीसा

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

–शंभु छंद –

श्री ऋषभदेव को वंदन कर, तीर्थंकर पद को नमन करूँ।
इस युग के सबसे प्रथम सिद्ध, सुअनंतवीर्य को नमन करूँ।।
फिर मोक्षधाम जाने वाले, प्रभु बाहुबली को नमन करूँ।
तीर्थंकर सुत श्री कामदेव, प्रभु चालीसा का पठन करूँ।।

–दोहा –

अतुल शक्ति बाहूबली, का मन में धर ध्यान।
गुण गरिमा युत कायबली, का कुछ करूँ बखान।।

–चौपाई –

जय हो कामदेव तुम स्वामी, बाहुबली प्रभु त्रिभुवन नामी।
तीर्थंकर के पुत्र कहाए, चक्रवर्ति से भ्राता पाए।।

तीर्थ अयोध्या जन्म भूमि थी, पुण्यमयी वह पापशून्य थी।
मात सुनन्दा हर्षाई थी, नगरी में खुशियाँ छाई थीं।।

तीर्थंकर श्री ऋषभदेव ने, प्रभु लक्षण लख बाहुबली में।
कहा पुत्र यह कायबली है, स्वाभिमान यह आत्मबली है।।

सवा पाँच सौ धनु की काया, हरितवर्ण तन सुन्दर माया।
सुन्दरि नामक बहन एक थी, बाहुबली के संग खेलती।।

इसी तरह भरतादिक सौ सुत, एवं ब्राह्मी कन्या संयुत।
मात यशस्वति अति प्रसन्न थी, तीर्थंकर पति पाए धन्य थी।।

ब्राह्मी सुन्दरि कन्याओं ने, सर्वप्रथम विद्या ली प्रभु से।
पुत्रों को भी सभी कलाएँ, तीर्थंकर प्रभु स्वयं बताएँ।।

दीक्षा लेते समय तात ने, सब पुत्रों को अलग राज्य दे।
भरत को राजमुकुट पहनाया, भुजबलि ने पोदनपुर पाया।।

कालान्तर में भरतचक्रि का, धर विजय कर चक्र रुका था।
सब भ्राताओं को कहलाया, मुझे क्यों नहीं शीश झुकाया।।
जब तक ये मस्तक न झुकेंगे, हम चक्री कैसे बन लेंगे।
इस घटना से सभी भ्रात ने, जा दीक्षा ली ऋषभनाथ से।।
एक बचे पोदनपुर राजा, बाहूबली नाम अधिराजा।
बोले नहिं अन्याय सहूँगा, मैं तो राजा नहीं कहूँगा।।
ज्येष्ठ भ्रात मम पिता तुल्य है, मुझमें भी तो बल अतुल्य है।
युद्ध क्षेत्र में निर्णय होगा, चक्रवर्ति का अविनय होगा।।
हुआ अहिंसक युद्ध उभय से, नेत्र युद्ध, जल, मल्ल युद्ध थे।
बाहुबली तीनों में विजयी, हुए चक्रवर्ती से अजयी।।
चक्रवर्ति ने चक्र लगाया, वह भी उसको मार न पाया।
जनता ने उनको धिक्कारा, किया बाहुबलि का जयकारा।।
भुजबलि मन वैराग्य समाया, भरत हृदय ममता भर लाया।
क्षमा भाव भर चला विरागी, फिर न बने बाहूबलि रागी।।
तज नश्वर वैभव की माया, भरतराज को भी समझाया।
राज्य विभव तो सभी छुटेगा, वर्ना निज साम्राज्य लुटेगा।।
बाहुबली ने दीक्षा धारी, मन में पितु की शिक्षा धारी।
एक वर्ष तक करी तपस्या, वन जन्तू कर रहे परीक्षा।।
कई ऋद्धियाँ प्रगट हुई थीं, जन कल्याण निमित्त हुई थी।
एक दिवस भरताधिप आए, दर्शन पूजन कर हर्षाये।।
बाहुबलि को इक विकल्प था, भ्रात को मुझसे हुआ कष्ट था।
इसे शल्य नहिं कह सकते हैं, व्रती शल्य विरहित रहते हैं।।
इस विकल्प को तजते ही वे, बने केवली बाहुबली थे।
पितु से पहले शिवपद पाया, छोड़ आए अपनी यशकाया।।
तब से बाहुबली की प्रतिमा, बनती है बहुतेक अनुपमा।
इनकी भक्ती शक्ती देती, मोक्ष प्राप्ति की युक्ती देती।।

सोरठा – चालिस दिन पर्यन्त, जो यह चालीसा पढ़े।
निर्बलता हो अन्त, उन मन तन शक्ती बढ़े।।
वीर संवत् पच्चीस, सौ बाईस आश्विन सुखद।
शुक्ला तिथि दशमी, तिथि की यह रचना सरस।।
गणिनि शिरोमणि मात, ज्ञानमती शिष्या कहे।
नाम 'चंदना' ख्यात, की यह कृति शाश्वत रहे।।
मुझ मन का अज्ञान, दूर करे समता भरे।।
हे प्रभु मुझमें ज्ञान, पूर भरे समता टरे।।
बाहुबली की मूर्ति, जहाँ-जहाँ सुविराजती।
ऋद्धि सिद्धि सुख पूर्ति, वहाँ-वहाँ हो शाश्वती।।

भगवान बाहुबली की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–जयति जय जय मां सरस्वती जयति वीणा वादिनी......

जयति जय-जय गोम्मटेश्वर, जयति जय बाहूबली।
जयति जय भरताधिपति, विजयी अनूपम भुजबली।।टेक.।।
श्री आदिनाथ युगादिब्रह्मा, त्रिजगपति विख्यात हैं।
गुणमणि विभूषित आदिप्रभु के, भरत और बाहूबली।।जयति.।।1।।
वृषभेश जब तप वन चले, तब न्याय नीती कर गये।
साकेतनगरीपति भरत, पोदनपुरी बाहूबली।।जयति जय.।।2।।
षट्खण्ड जीता भरत ने, मन की नहीं आशा बुझी।
निज चक्ररत्न चला दिया, फिर भी विजयी बाहूबली।।जयति जय.।।3।।
तन से प्रभू निर्मम हुए, वन जन्तु क्रीडा कर रहे ।
सिद्धी रमा वरने चले, प्रभु वीर बन बाहूबली।।जयति जय.।।4।।
प्रभु बाहुबलि की नग्न मुद्रा, सीख यह सिखला रही।
सब त्याग करके ''चंदनामति'', तुम बनो बाहूबली ।।जयति जय.।।5।।